



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 14 जुलाई 2025 ● वर्ष 6 ● अंक 51 ● मूल्य: 5 रुपए



राष्ट्रपति के 4 नये...



मैंने स्वयं साधना और तप के माध्यम से परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त किया और उसी अनुभव के आधार पर एक ग्रंथ लिखा, जिसका नाम 'मयखाना' रखा।

पेज-10-11

10 हजार स्कूल बंद करने पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होगी बच्चों की पढ़ाई पर बड़ा संकट



@ भारतश्री ब्लूरो

उत्तर प्रदेश में सरकार ने 10,827 सरकारी प्राथमिक स्कूलों को बंद कर दूसरे स्कूलों में मिलाने (विलय) का फैसला लिया है। इस फैसले पर विवाद बढ़ गया है। इसे चुनौती देने वाली याचिका पहले हाईकोर्ट ने खारिज कर दी थी, लेकिन अब यह मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। जिस्टिस सूर्यकांत और जिस्टिस जॉयमाल्या बागची की बेंच ने इस मामले की इसी हफ्ते सुनवाई करने पर सहमति जताई है। अदालत ने कहा कि यह नीतिगत फैसला जरूर है, लेकिन अगर इससे बच्चों की पढ़ाई पर असर पड़ता है तो इस पर सुनवाई की जाएगी।

वाले 10,827 स्कूलों को आसपास के स्कूलों में मिलाने का फैसला किया है। सरकार का कहना है कि इससे संसाधनों का बेहतर उपयोग होगा और गुणवत्ता बढ़ेगी।

सरकार कातर्क आयासामने

जिन स्कूलों में बहुत कम बच्चे पढ़ रहे हैं, उन्हें पास के स्कूलों में मिलाकर एक मजबूत स्कूल बनाया जाएगा। इससे बच्चों को बेहतर शिक्षकों और संसाधनों का फायदा मिलेगा। सरकारी खर्च को भी कम किया जा सकेगा। शिक्षा की गुणवत्ता पर सरकार का फोकस रहेगा। हालांकि, ग्रामीण इलाकों और गरीब परिवर्गों के बच्चों के लिए दूर जाकर स्कूल जाने की समस्या सरकार की इस योजना पर सवाल खड़े कर रही है।

के अवसर सुरक्षित किए जाएंगे।

ग्रामीण परिवारों की बढ़ी चिंता

उत्तर प्रदेश के कई जिलों में माता-पिता परेशान हैं कि उनके बच्चों को अब दूर जाकर स्कूल जाना पड़ेगा। कई गांवों में बच्चों को 2-3 किलोमीटर दूर तक स्कूल जाना पड़ेगा, जहां जाने के लिए सड़क और परिवहन की सुविधा भी नहीं है। लड़कियों की सुरक्षा और उनकी पढ़ाई को लेकर माता-पिता की चिंता और बढ़ गई है। कुछ गांवों में ग्रामीणों ने स्कूल बंद करने का विरोध करते हुए कहा है कि इससे उनके बच्चों की पढ़ाई छूट जाएगी।

सुप्रीम कोर्ट इसी सप्ताह करेगा सुनवाई

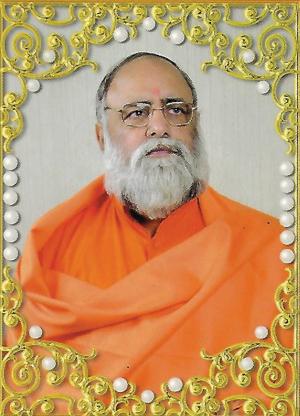
सुप्रीम कोर्ट इस मामले की सुनवाई इसी हफ्ते कर सकता है। अदालत यह देखेगी कि क्या यूपी सरकार का स्कूल विलय का फैसला बच्चों के शिक्षा के अधिकार का उल्लंघन कर रहा है। यदि अदालत को लगेगा कि बच्चों की पढ़ाई पर इसका असर पड़ेगा, तो इस फैसले पर रोक लग सकती है। या सरकार से नए दिशा-निर्देश मांगे जा सकते हैं। शिक्षा हर बच्चे का अधिकार है। सरकार की जिम्मेदारी है कि वह शिक्षा को सुलभ और आसान बनाए। स्कूल विलय से अगर बच्चों को पढ़ाई में दिक्कत आती है, तो यह देश के भविष्य पर असर डालेगा। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला न केवल यूपी बल्कि पूरे देश के लिए मिसाल बन सकता है कि बच्चों की शिक्षा को किसी भी सरकारी नीति में सबसे ऊपर प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

दिव्य पाठ से भक्ति, मुक्ति, संतान, अर्थ, काम सहित हर प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण की जा सकती हैं। यह तथ्य पूरी तरह शास्त्रोक्त है।

जिन असाध्य रोगों का हलाज इस जगत में नहीं है, वे रोग दिव्य पाठ से सहज दूर होते हैं। इस तथ्य को स्वयं वैज्ञानिक जगत प्रमाणों के साथ स्वीकार कर रहा है।

प्रभु कृपा के आलोक से निर्दिष्टता को सम्पन्नता में परिवर्तित किया जा सकता है। इस आलोक में मांलक्ष्मी की कृपाओं का वास है।

सद्गुरु वाणी



दिव्य पाठ से भक्ति, मुक्ति, संतान, अर्थ, काम सहित हर प्रकार की मनोकामनाएं पूर्ण की जा सकती हैं। यह तथ्य पूरी तरह शास्त्रोक्त है।

जिन असाध्य रोगों का हलाज इस जगत में नहीं है, वे रोग दिव्य पाठ से सहज दूर होते हैं। इस तथ्य को स्वयं वैज्ञानिक जगत प्रमाणों के साथ स्वीकार कर रहा है।

प्रभु कृपा के आलोक से निर्दिष्टता को सम्पन्नता में परिवर्तित किया जा सकता है। इस आलोक में मांलक्ष्मी की कृपाओं का वास है।

याचिकाकर्ता का पक्ष

याचिका तैयाब खान सलमानी ने दाखिल की है। उनके वकील प्रदीप यादव ने सुप्रीम कोर्ट से तत्काल सुनवाई की अपील की थी। याचिका में कहा गया है कि यूपी सरकार का स्कूलों का विलय करना मनमाना और बच्चों के अधिकारों का उल्लंघन है। बच्चों को स्कूल जाने के लिए अब 1 किलोमीटर से ज्यादा पैदल चलना पड़ेगा। यह संविधान के अनुच्छेद 21ए और बच्चों के मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा के अधिकार (RTE) अधिनियम, 2009 का उल्लंघन है। बच्चों और उनके माता-पिता को मुश्किलें झेलनी पड़ेंगी, जिससे गरीब और ग्रामीण परिवारों के बच्चे स्कूल छोड़ सकते हैं।

सरकार ने 1.3 लाख प्राथमिक स्कूलों में से कम छात्रों



ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)





सा

बन का महीना शुरू होते ही दिल्ली में कांवड़ यात्रा की धूम मच गई है। लाखों शिव भक्त नगे पांव गंगा जल लेकर अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन इस बार शाहदरा इलाके में कांवड़ यात्रा के रूट पर कांच के टुकड़े मिलने की घटना ने सबको चौंका दिया है। क्या ये महज इतेकाक है या फिर कोई सुनियोजित साजिश? इस सवाल ने न केवल श्रद्धालुओं के बीच गुस्सा पैदा किया, बल्कि सियासी हल्कों में भी हंगामा मचा दिया है। इस लेख में हम इस घटना को हर एंगल से देखेंगे, तथ्यों को सामने रखेंगे और इसका विश्लेषण करेंगे।

कांच की किरणें: क्या हुआ शाहदरा में?

12 जुलाई 2025 की रात, दिल्ली के शाहदरा में कांवड़ यात्रा के रूट पर करीब एक से ढेर किलोमीटर तक कांच के टुकड़े बिखरे मिले। ये घटना चिंतामणी चौक से शाहदरा फ्लाईओवर तक के रास्ते पर सामने आई। स्थानीय लोगों और कांवड़ियों ने बताया कि कांच की बोतलों के टुकड़े सड़क पर इस तरह फैले थे, जैसे उन्हें जानबूझकर बिखरा गया हो। चूंकि कांवड़िए नगे पांव चलते हैं, ये टुकड़े उनके लिए बड़ा खतरा बन सकते थे।

स्थानीय बीजेपी विधायक संजय गोयल को जैसे ही इसकी खबर मिली, वे तुरंत मौके पर पहुंचे और हालात का जायजा लिया। उन्होंने इसे “शाराती तत्वों” की करतूत बताया और कहा कि ये साजिश के तहत किया गया है। दिल्ली सरकार के मंत्री कपिल मिश्रा ने भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ‘X’ पर पोस्ट करके इस घटना की निंदा की। उन्होंने लिखा, “दिल्ली के शाहदरा में कुछ शाराती तत्वों ने कांवड़ यात्रा के मार्ग पर कांच के टुकड़े बिखरे दिए। PWD और नगर निगम के कर्मचारी रास्ता साफ कर रहे हैं।”

दिल्ली पुलिस ने तुरंत एक्शन लिया और लोक निर्माण विभाग (PWD) के एक जनियर इंजीनियर की शिकायत पर FIR दर्ज की। भारतीय दंड संहिता की धारा 125 (लापरवाही से खतरा पैदा करना) और धारा 299 (धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की कोशिश)

के तहत मामला दर्ज किया गया। पुलिस अब CCTV फुटेज खंगाल रही है ताकि दोषियों की पहचान हो सके।

सियासी रंग: आरोप-प्रत्यारोप का खेल

इस घटना ने दिल्ली की सियासत को भी गर्म दिया है। बीजेपी नेताओं ने इसे साजिश करार देते हुए दिल्ली सरकार को निशाने पर लिया। कपिल मिश्रा ने दावा किया कि ये कांवड़ यात्रा को बाधित करने और धार्मिक सौहार्द बिगाड़ने की कोशिश है। बीजेपी विधायक संजय गोयल ने कहा, “ये शरारती तत्वों की साजिश है, जिसका मकसद कांवड़ियों को चोट पहुंचाना और दिल्ली सरकार के खिलाफ नाराजगी फैलाना है।”

वहीं, कुछ नेताओं और सोशल मीडिया यूजर्स ने इसे “कट्टरपंथियों” की साजिश बताया, हालांकि पुलिस ने अभी तक किसी समुदाय या गुप्त को दोषी नहीं ठहराया है। दूसरी तरफ, विपक्षी नेताओं ने बीजेपी पर सियासी फायदा उठाने का आरोप लगाया। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने हाल ही में कांवड़ यात्रा से जुड़े एक अन्य विवाद पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि धार्मिक आयोजनों का इस्तेमाल सियासी हथियार के तौर पर नहीं करना चाहिए।

दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने इस मामले में तुरंत संज्ञान लिया और PWD व MCD को रास्ता साफ करने का आदेश दिया। उन्होंने कहा, “कांवड़ यात्रा में कोई व्यवधान नहीं होने देंगे।” कुछ ही घंटों में रास्ता साफ कर दिया गया, लेकिन सवाल ये है कि क्या ये सियासी ड्रामा बनकर रह जाएगा या वाकई दोषियों को पकड़ा जाएगा?

कांवड़ यात्रा और सुरक्षा: कितने तेजार हैं हम?

कांवड़ यात्रा भारत की सबसे बड़ी धार्मिक यात्राओं में से एक है। हर साल लाखों श्रद्धालु हरिद्वार, गढ़ गंगा और अन्य जगहों से गंगा जल लेकर अपने स्थानीय शिव मंदिरों में चढ़ाने के लिए पैदल यात्रा करते हैं। इस साल दिल्ली में 15 से 20 लाख कांवड़ियों के आने की उम्मीद है। ऐसे में उनकी सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करना प्रशासन के लिए बड़ी चुनौती है।

दिल्ली पुलिस ने शाहदरा जिले को तीन जोन में बांटा

है—अप्सरा बॉर्डर से शाहदरा फ्लाईओवर, केशव चौक से फर्श बाजार, और विवेक विहार जौन। 770 पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है और डोन से निगरानी हो रही है। 18 कांवड़ शिविर भी बनाए गए हैं, जहां भोजन, पानी और विश्राम की व्यवस्था है।

लेकिन कांच की इस घटना ने सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। अगर एक किलोमीटर तक कांच बिखरा जा सकता है, तो क्या ऐसी घटनाएं भविष्य में और बड़ी परेशानी खड़ी कर सकती हैं? स्थानीय लोग भी चिंतित हैं। एक स्थानीय निवासी ने कहा, “ये न केवल कांवड़ियों के लिए खतरा है, बल्कि साफ-सफाई और कानून-व्यवस्था पर भी सवाल उठाता है।”

साजिश या लापरवाही: सच क्या है?

क्या शाहदरा में कांच के टुकड़े वाकई साजिश का हिस्सा थे? या ये सिर्फ लापरवाही का नतीजा था? इस सवाल का जवाब अभी तक साफ नहीं है। कुछ लोग इसे धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की कोशिश मान रहे हैं। सोशल मीडिया पर कई यूजर्स ने इसे “प्रयोग” करार दिया, क्योंकि कांच एक बड़े इलाके में व्यवस्थित रूप से बिखरा था।

हालांकि, कुछ जानकारों का मानना है कि ये किसी ठेके या दुकान से टूटी बोतलों का मलबा भी हो सकता है, जिसे सही तरीके से साफ नहीं किया गया। लेकिन इस थ्योरी को कम लोग मान रहे हैं, क्योंकि कांच का इतने बड़े पैमाने पर बिखरना संयोग से ज्यादा साजिश की ओर इशारा करता है।

पुलिस ने अभी तक कोई ठेस सबूत नहीं दिया है, लेकिन CCTV फुटेज और क्राइम ब्रांच की जांच से जल्द ही कुछ सुराग मिलने की उम्मीद है। दिल्ली के LG विनय कुमार सक्सेना ने भी इस मामले का संज्ञान लिया और जांच के लिए सख्त निर्देश दिए हैं।

भविष्य के लिए सबक: क्या करें?

इस घटना ने कांवड़ यात्रा की सुरक्षा और प्रबंधन पर कई सवाल खड़े किए हैं। पहला, प्रशासन को

और सतर्क रहने की जरूरत है। CCTV कैमरों की संख्या बढ़ानी होगी और रियल-टाइम मॉनिटरिंग करनी होगी। दूसरा, ऐसी घटनाओं को सियासी रंग देने से बचना चाहिए, ताकि सामाजिक सौहार्द बरकरार रहे।

कांवड़ यात्रा जैसे बड़े आयोजन में लाखों लोग शामिल होते हैं। ऐसे में छोटी-सी लापरवाही भी बड़ा खतरा बन सकती है। सरकार और प्रशासन को चाहिए कि वे न केवल रास्तों की सफाई और सुरक्षा सुनिश्चित करें, बल्कि ऐसी घटनाओं के पीछे की मंशा को जल्द से जल्द उजागर करें। साथ ही, आप लोगों को भी जागरूक रहना होगा और किसी भी संदिग्ध गतिविहार को तुरंत रिपोर्ट करना होगा।

इसके अलावा, कांवड़ यात्रा के रूट पर मांस की दुकानों को बंद करने और दुकानदारों के नाम प्रदर्शित करने जैसे नियमों को लेकर भी विवाद चल रहा है। इन नियमों का मकसद धार्मिक भावनाओं का सम्मान करना है, लेकिन इनका गलत इस्तेमाल सामाजिक तनाव को बढ़ा सकता है। इसलिए, प्रशासन को संतुलित और पारदर्शी तरीके से काम करना होगा।

सतर्कता और एकता की जरूरत

शाहदरा में कांच के टुकड़ों की घटना ने कांवड़ यात्रा की पवित्रता और सुरक्षा पर सवाल उठाए हैं। ये महज एक हादसा हो सकता है, या फिर सुनियोजित साजिश। लेकिन इससे पहले कि हम निष्कर्ष पर पहुंचें, जरूरी है कि जांच पूरी हो और दोषियों को सजा मिले।

कांवड़ यात्रा एक धार्मिक और सांस्कृतिक परंपरा है, जो लाखों लोगों की आस्था से जुड़ी है। इसे सियासी रंग देने से ज्यादा साजिश का कारण बनाने से बचना चाहिए। दिल्ली पुलिस, प्रशासन और सरकार को मिलकर ये सुनिश्चित करना होगा कि कांवड़िए सुरक्षित और सम्मानजनक तरीके से अपनी यात्रा पूरी कर सकें। साथ ही, समाज के हर वर्ग को एकजुट होकर ऐसी घटनाओं को रोकने में योगदान देना होगा। आखिरकार, आस्था और सौहार्द ही इस देश की ताकत हैं।

उड़ीसा की छात्रा ने कॉलेज परिसर में खुद को लगाई आग 95% जलने के बाद दो दिन संघर्ष कर तोड़ा दम



@ रिकू विश्वकर्मा

उड़ीसा के बालासोर जिले की फकीर मोहन कॉलेज में इंटीग्रेटेड बीएड सेकंड ईयर की छात्रा ने 12 जुलाई को कॉलेज परिसर में खुद को आग लगा ली। दो दिन तक जिंदगी और मौत से जूझने के बाद 14 जुलाई की देर रात उसने दम तोड़ दिया। आरोप है कि छात्रा कॉलेज के हेड ऑफ डिपार्टमेंट (HOD) समीर साहू की यौन प्रताड़ना और धमकियों से परेशान थी, जिसकी शिकायत बार-बार कॉलेज प्रशासन और पुलिस से करने के बावजूद कार्रवाई नहीं की गई।

आगलगाने से पहले प्रिंसिपल से हुई थी अंतिम मुलाकात

12 जुलाई को छात्रा कॉलेज के प्रिंसिपल दिलीप घोष के ऑफिस में गई थी। छात्रा की शिकायत थी कि एचओडी उससे यौन संबंधों की मांग कर रहा था, मना करने पर भविष्य बर्बाद करने की धमकी दे रहा था। आरोप है कि प्रिंसिपल ने उसे शिकायत वापस लेने को कहा। प्रिंसिपल के कमरे से बाहर निकलते ही कुछ सेकंड बाद छात्रा ने अपने ऊपर पेट्रोल डालकर आग लगा ली। इस घटना का सीसीटीवी फुटेज सामने आया है, जिसमें छात्रा को जलते हुए बाहर की ओर भागते देखा गया। उसके पीछे कुछ छात्र और कर्मचारी भागते देखे, जिन्होंने कपड़ों से आग बुझाने की कोशिश की।

95% तक छुलसी, एक्स में तोड़ा दम

सबसे पहले छात्रा को बालासोर जिला अस्पताल ले जाया गया, जहाँ हालत गंभीर होने पर उसे एम्स भुवनेश्वर शिफ्ट कर दिया गया। छात्रा का शरीर 90-95% तक जल चुका था। डॉक्टरों ने उसे मैकेनिकल वेंटिलेशन, आईवी सपोर्ट, एंटीबायोटिक्स और थेरेपी दी, लेकिन जलन और



समीर साहू और प्रिंसिपल दिलीप घोष दोनों को गिरफ्तार कर लिया। दोनों को कॉलेज से सस्पेंड कर दिया गया। प्रिंसिपल को 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा गया है।

उड़ीसा के मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी ने घटना पर दुख जताते हुए ट्वीट किया, "छात्रा के निधन की खबर से दुखी हूँ। दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाने का निर्देश अधिकारियों को दिया गया है। सरकार परिवार के साथ खड़ी है। अब दोषियों को मिले सजा, ताकि और किसी बेटी को आग न बनना पड़े" सरकार ने मामले की जांच के लिए तीन सदस्यीय कमेटी बनाई है। क्राइम ब्रांच की टीम भी जांच कर रही है। पर सवाल यह है कि इस कार्रवाई का क्या मतलब जब एक बेटी को न्याय दिलाने के लिए खुद को आग लगानी पड़ जाए।

छात्रा की मौत के बाद कॉलेज परिसर और बालासोर में भारी गम और गुस्से का माहौल है। छात्र संगठन और महिला अधिकार कार्यकर्ताओं ने दोषियों को फास्ट ट्रैक कोर्ट में सजा दिलाने की मांग की है।

आखिरी सिसकियों में भी व्याय की उम्मीद

एम्स में भर्ती छात्रा ने आखिरी बार अपने पिता से कहा था, "पापा, मैं बचना चाहती हूँ उन्होंने मुझे बहुत परेशान किया।" लेकिन डॉक्टरों की कोशिश के बावजूद उसकी जान नहीं बचाई जा सकी। छात्रा ने कई बार शिकायत की, फिर भी कॉलेज प्रशासन ने एचओडी पर कार्रवाई क्यों नहीं की? पुलिस ने शिकायत दर्ज करने के बाद भी त्वरित गिरफ्तारी और जांच क्यों नहीं की? प्रिंसिपल ने शिकायत वापस लेने के लिए दबाव क्यों बनाया? छात्रा की मौत के बाद भले ही एचओडी और प्रिंसिपल को गिरफ्तार कर लिया गया, कमेटी बन गई, जांच हो रही है, लेकिन यह सवाल उठता है कि अगर समय रहते शिकायतों को गंभीरता से लिया गया होता, तो क्या आज यह बेटी जिंदा होती?

घटना के बाद प्रशासन में हड़कंप

मामला बढ़ने पर 12 जुलाई को ही पुलिस ने एचओडी

जजों पर टिप्पणी कर फँसे विकास दिव्य कीर्ति कोर्ट में पेश होने का आदेश, जानें पूरा मामला

@ रिकू विश्वकर्मा

ट्रिप्पणी आईएएस कोचिंग के संस्थापक और चर्चित वीडियो लेकर विवादों में घिर गए हैं। इस वीडियो में उन्होंने न्यायपालिका और जिला न्यायाधीशों को लेकर टिप्पणी की थी, जिसके बाद राजस्थान के अजमेर की अदालत ने उनके खिलाफ मामला दर्ज करने और उन्हें कोर्ट में पेश होने का आदेश दिया है। लाइव लॉ की रिपोर्ट के मुताबिक, अदालत ने कहा कि प्रथम दृष्ट्या यह प्रमाणित होता है कि विकास दिव्य कीर्ति ने जानबूझकर लोकप्रियता पाने और ध्यान खींचने के इरादे से न्यायपालिका के खिलाफ अपमानजनक और व्यावधात्मक भाषा का प्रयोग किया।

कौन सा वीडियो बना विवाद की जड़?

जिस वीडियो को लेकर यह पूरा विवाद खड़ा हुआ, उसका टाइटल था, “IAS Versus Judge: कौन ज्यादा ताकतवर है? बेस्ट गाइडेंस बाय विकास दिव्य कीर्ति” यह वीडियो यूट्यूब पर अलग-अलग चैनलों से अपलोड हुआ, जिसमें विकास दिव्य कीर्ति जिला जज, एसपी और कलेक्टर के बीच की प्रशासनिक ताकत और व्यावहारिक व्यवस्था पर टिप्पणी कर रहे थे। उन्होंने कहा, “डिस्ट्रिक्ट जज टेक्निकली पावरफुल तो है, पर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और एसपी जितना पावरफुल नहीं होता। जुडिशरी की सारी ताकत इस भरोसे पर है कि एसपी मेरी बात मानेगा, वरना सारी ताकत खत्म।” दिव्यकीर्ति ने आगे कहा कि “एसपी, डीएम, डीजे (डिस्ट्रिक्ट जज) मिलकर जिला चलाते हैं, सबकी अपनी मजबूरियां होती हैं। वीक में एक-दो बार मिलते हैं, गोलगप्पे खाते हैं, गर्ये मारते हैं, और सब सेट हो जाते हैं।”

न्यायपालिका का उपहास उड़ाया गया

अजमेर के अतिरिक्त सिविल न्यायाधीश और न्यायिक मजिस्ट्रेट मनमोहन चंदेल ने 8 जुलाई को अपने आदेश में कहा कि वीडियो में न्यायपालिका का उपहास उड़ाया गया है, जिससे न्यायिक पदाधिकारियों की गरिमा, निष्पक्षता और प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा है। कोर्ट ने कहा कि वीडियो में इस्तेमाल की गई भाषा “नीचा दिखाने वाली और अपमानजनक” थी, जिससे न्यायपालिका की छवि और विश्वसनीयता पर चोट पहुंची। अदालत ने भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 3532 (सार्वजनिक उपद्रव), 3562 और 3563 (मानहानि), और आईटी एक्ट की धारा 66A (B) के तहत शिकायत दर्ज करने का आदेश दिया।

कमलेश मंडोलिया ने की शिकायत

यह शिकायत कमलेश मंडोलिया नामक व्यक्ति ने दायर की। उन्होंने कहा कि वीडियो में की गई टिप्पणियां आईएएस अधिकारियों और जजों के लिए अपमानजनक हैं। इससे न केवल कानून के पेशेवरों की भावनाएं आहत हुई हैं, बल्कि जनता के मन में न्यायपालिका के प्रति सम्मान और विश्वास भी कमज़ोर हुआ है। यह वीडियो सार्वजनिक रूप से प्रसारित कर न्यायपालिका का मजाक उड़ाता है। विकास दिव्य कीर्ति की ओर से कोर्ट में दिए गए



जवाब में कहा गया कि उनका उस यूट्यूब चैनल से कोई संबंध नहीं है, जिसने यह वीडियो अपलोड किया। वीडियो किसी तीसरे पक्ष ने उनकी अनुमति के बिना एडिट और पब्लिश किया है। न तो दृष्टि आईएएस और न ही उनकी ओर से किसी ने इसे प्रकाशित करने की अनुमति दी थी। वीडियो में किसी व्यक्ति या समूह को निशाना नहीं बनाया गया, बल्कि प्रशासनिक ढांचे को लेकर सामान्य टिप्पणी थी। शिकायतकर्ता इस धारा के तहत पीड़ित व्यक्ति के रूप में नहीं आते, इसलिए शिकायत खारिज की जानी चाहिए।

कोर्ट ने हन दलीलों को क्यों खारिज किया?

कोर्ट ने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता संविधान प्रदत्त अधिकार है, पर इसकी सीमाएं भी हैं। इस अधिकार की आड में न्यायपालिका और न्यायाधीशों का अपमान नहीं किया जा सकता। सुप्रीम कोर्ट ने अरुंधति रॉय (2002) और प्रशांत भूषण (2020) मामले में स्पष्ट कर दिया है कि न्यायपालिका की गरिमा को ठेस पहुंचाने

वाली अभिव्यक्ति संरक्षण योग्य नहीं है। विकास दिव्य कीर्ति की ओर से यह साबित करने के लिए कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया कि वीडियो अपलोड करने वाली तीसरी पार्टी को नोटिस भेजा गया हो या वीडियो के खिलाफ किसी भी प्रकार की आपत्ति दर्ज कराई गई हो। अगर वीडियो में कहीं गई बातों पर कोई बुरी मंशा नहीं थी, तब भी आरोपी माफी मांग सकता था, लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया।

हाई कोर्ट का आदेश सर्वोपरि होता है

“अगर हाई कोर्ट आदेश दे, तो कलेक्टर और मुख्यमंत्री भी उसका पालन करने को बाध्य हैं। हाई कोर्ट कंटेम्प्ट ऑफ कोर्ट में सीधा जेल भेज सकता है। हाई कोर्ट का आदेश सर्वोपरि होता है।” हाई कोर्ट की शक्तियों पर वीडियो में कहा गया कि “हाई कोर्ट कोर्ट ऑफ रिकॉर्ड है। इसके निर्णय सभी सबोर्डिनेट कोर्ट्स को मानने होते हैं। हाई कोर्ट कंटेम्प्ट ऑफ कोर्ट में किसी को भी जेल भेज सकता है, और ऐसा कई मामलों में हुआ है। हाई कोर्ट कुछ

कह दे, तो चुपचाप मान लो। वरना बुला कर कोर्ट में डांट पड़ती है, जो बहुत बुरा लगता है।”

22 जुलाई को अदालत में पेश होने वाले दिव्यकीर्ति

अजमेर कोर्ट ने विकास दिव्य कीर्ति को 22 जुलाई को व्यक्तिगत रूप से अदालत में पेश होने का आदेश दिया है। यदि आरोपी पक्ष दोषी पाया जाता है, तो यह मामला बीएनएस की धाराओं और आईटी एक्ट के तहत दंडनीय अपराध माना जाएगा। यह मामला सिर्फ विकास दिव्य कीर्ति या दृष्टि आईएएस से जुड़ा विवाद नहीं है, बल्कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और न्यायपालिका की गरिमा के बीच संतुलन का सवाल भी है। क्या सार्वजनिक मंच पर न्यायपालिका की आलोचना और उसके कामकाज पर टिप्पणी को अपराध माना जा सकता है? क्या व्यावधात्मक अधिकारियों की आलोचना और उनके कामकाज पर टिप्पणी को अपराध माना जा सकता है? क्या एक शिक्षक या वक्ता को अपने शब्दों के प्रभाव का ध्यान नहीं रखना चाहिए, खासकर जब हजारों विद्यार्थी और नागरिक उन्हें सुनते हैं?

सोमवार, 14 जुलाई 2025, विक्रम संवत् 2080

भाषा विवाद के लिए हिंदी पट्टी के राज्य और राजनीति जिम्मेदार

Eक केल कांग्रेसी जिसे अब कई साल से निरंतर निजी रूपले करने करने के कारण नैने पुरानी रीत अनुसार लिस्ट से बाहर कर दिया, बोल रहा है। भाषा विवाद के लिए हिंदी पट्टी के राज्य और राजनीति जिम्मेदार हैं। बेशक हिंदी थोपने का अभियान एक समय चला था। बहुत सारे नेता इसे हिंदू और हिंदुस्तान से भी जोड़ते थे। कई ऐसे थे जिन्हें व्यवरणिक तौर पर हिंदी वो भाषा लगती थी जो भाषा के माने में सन्दृढ़ देश की माध्यम भाषा बने। फिर भी आज का सव ये है कि हिंदी पट्टी का आदमी ऐसे किसी आंदोलन या अभियान का हिस्सा नहीं है। वो बेचारा इंशिला स्पीकिंग क्लास ले रहा है। केंद्र ने यदि हिंदी थोपने का प्रयास किया है तो वो विशुद्ध सरकारी प्रयास है। बीजेपी तक खुलकर ऐसी बात कहने से बचती है।

सरकार चलाने वाले प्रभावशाली लोगों में मुश्किल से किसी की मात्रभाषा हिंदी होगी। नौकरशाही की ही ही नहीं। फिर ये समझना कितना कठिन है कि ऐसे प्रयास बस वोट जुटाऊ प्लान का हिस्सा हैं? और उधर यहले दक्षिण भारतीयों को पीटने वाले अग्र अब उत्तर भारतीयों को पीटने के लिए एकजुट हुए हैं तो वो भी वोट जुटाऊ मानला है। सरकार में बैठी शिवसेना को ये सब नहीं सूझता। हाँ, इन दलों को मुद्दा ज़रूर हिंदी पट्टी के दल वाली सरकार ने थमाया है। हैरान मत होइएगा अगर ये सारे गठबंधन में साथ दियें। असल प्रश्न कांग्रेस के सामने है जिसने भाषायी आंदोलन की आंच असल में झेली है, वो किसके साथ जाएगी? अच्छा है कि केसबुकिया सलाहकार बस पोस्ट लिख पाते हैं, वो वार्क राहुल प्रियंका के आंख, कान, नाक नहीं हुए।

इस मुद्दे में खबूल बारीकियां हैं। नर तरह की हैं। एक दो पोस्ट में सब कह पाना नुकिन नहीं। बस गनीमत है कि हिंदी पट्टी वाले हिंदू मुस्लिम तो कर रहे हैं पर अभी भी नोएडा, गुडगांव, यंडीगढ़ में भाषा को लेकर समझदारी बनी हुई है। ये बनी रहे। देश बना रहे।

नितिन ठाकुर

जुबानी तीर

“

10 हजार से ज्यादा स्कूल बंद करने का फैसला बच्चों के भविष्य को तबाह करने वाला है। भाजपा सरकार प्रचार में अरबों रुपये खर्च करती है, लेकिन बच्चों की पढ़ाई पर खर्च नहीं कर सकती। इस फैसले से गरीब और ग्रामीण परिवारों की बेटियों की पढ़ाई रुक जाएगी, वे घर से दूर स्कूल नहीं जा सकेंगी। भाजपा सरकार शिक्षा, नौकरी, रोजगार देने में पूरी तरह फेल है, गरीबों को शिक्षा से बचत करना चाहती है। हमारी सरकार बनने पर शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे और हर स्तर पर शिक्षा व्यवस्था बेहतर की जाएगी।

अखिलेश यादव (सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री)



“



उम्मीद है।

सरकार का यह फैसला मनमाना और बच्चों के संविधानिक शिक्षा अधिकार का उल्लंघन है। स्कूल बंद होंगे तो बच्चों को 1 किलोमीटर से ज्यादा दूर तक पैदल जाना पड़ेगा, इससे गरीब बच्चों की पढ़ाई छूट जाएगी। हाईकोर्ट ने याचिका खारिज कर दी थी, अब सुप्रीम कोर्ट में न्याय की

तैयब खान सलमानी (याचिकाकर्ता)

“



छात्रों की संख्या कम होने की वजह से इन स्कूलों को मर्ज किया जा रहा है। इससे शिक्षकों की कमी और संसाधनों की समस्या दूर होगी, बच्चों को बेहतर पढ़ाई का माहौल मिलेगा। कोई भी बच्चा शिक्षा से बचत नहीं होगा, सबको पास के स्कूल में समायोजित किया जाएगा।

यूपी सरकार का पक्ष
(शिक्षा विभाग सूत्रों के मुताबिक)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच०टी० मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित। संपादक: महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक स्पष्टक्रियान के लिए ऑफिस के पाते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@bharatshri.com ईमेल करें।

लोकतंत्र बचाने की चुनौती या चुनावी डर?

@ अनुराग पाठक

बि

हार में विधानसभा चुनाव से पहले मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) अभियान एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य हर योग्य मतदाता का नाम सूची में शामिल करना और मृतक, स्थानांतरित या अपात्र मतदाताओं के नाम हटाना होता है। लेकिन इस बार इस प्रक्रिया पर राजनीति गर्म गई है। विपक्ष इसे सत्ता पक्ष और चुनाव आयोग की मिलीभगत करार दे रहा है, जबकि सत्तारूढ़ भाजपा-जदयू इसे चुनावी पारदर्शिता की दिशा में एक सही कदम बता रहे हैं। विपक्ष इसे सत्ता पक्ष और चुनाव आयोग की प्रियक्षित तेजस्वी यादव ने एसआईआर को लेकर कड़ा सवाल खड़ा किया है। तेजस्वी का आरोप है कि आयोग ने 16 जुलाई को जो प्रेस नोट जारी किया, उसमें 35 लाख नाम हटाने की पुष्टि कर दी गई, जो हब्बू मीडिया में सूत्रों के हवाले से पहले ही आ चुकी थी। तेजस्वी का सवाल खाजिब है कि जब मतदाता सूची पर कार्य चल रहा है और प्रक्रिया पूरी नहीं हुई, तो तीन दिन पहले ही वही आंकड़ा प्रेस नोट में कैसे आया? उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि अभी भी राज्य में कई जगह BLO (बूथ लेवल ऑफिसर) घर-घर नहीं पहुंचे हैं, तो इतनी बड़ी संख्या में नाम हटाने की जानकारी कैसे आ गई?

तेजस्वी का यह बयान केवल संदेह नहीं, बल्कि सीधा आरोप है कि चुनाव आयोग भाजपा के इशारे पर काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि वे चुनाव आयोग के अधिकारियों से दिल्ली और पटना में लगातार मिले, लेकिन आयोग ने एक बार भी प्रेस कॉन्फ्रेंस कर स्थिति स्पष्ट नहीं की। तेजस्वी ने इसे "लोकतंत्र के लिए खतरनाक तरीका" करार देते हुए साफ कहा कि "हमें एसआईआर से नहीं, इसके तरीके से दिक्कत है।"

वास्तव में, मतदाता सूची की शुद्धता किसी भी चुनावी प्रक्रिया की बुनियाद होती है। अगर मृतक या फर्जी नाम सूची में बने रहते हैं, तो फर्जी मतदाता और गडबड़ी की आशंका रहती है। इसलिए यह पुनरीक्षण जरूरी है। लेकिन इतने बड़े अभियान में पारदर्शिता जरूरी है। चुनाव आयोग को चाहिए था कि वह सभी दलों को बुलाकर प्रक्रिया साझा करता, संदेह दूर करता और संभावित आंकड़ों पर चर्चा कर स्पष्टता देता। इससे संदेह की गुंजाइश कम रहती तेजस्वी यादव की आशंका को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। लोकतंत्र की पारदर्शिता के लिए जरूरी है कि चुनाव आयोग राज्य में एसआईआर प्रक्रिया के हर पहलू को पारदर्शी बनाए। 35 लाख नाम हटाने की खबर ने मतदाताओं में भी असमंजस पैदा किया है। आयोग को चाहिए कि वह सभी

दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर उन्हें भरोसे में ले और यह सुनिश्चित करें कि किसी योग्य मतदाता का नाम सूची से न करें।

बिहार में लोकतंत्र की गूंज हमेशा देश में सुनी जाती रही है। जेपी आंदोलन से लेकर सामाजिक न्याय की लड़ाई तक बिहार ने देश को लोकतांत्रिक चेतना दी है। ऐसे में मतदाता सूची को लेकर विवाद होना चिंता का विषय है। तेजस्वी ने इसे लोकतंत्र बचाने की लड़ाई बताया है और कहा कि वह सभी बड़े नेताओं को पत्र लिखकर इस मुद्दे पर समर्थन मांग रहे हैं। 19 जुलाई को दिल्ली में होने वाली INDIA गठबंधन की बैठक में भी तेजस्वी यह मुद्दा उठाएंगे। सत्तारूढ़ दल भाजपा और जदयू इस प्रक्रिया को सही उठारा रहे हैं, लेकिन मतदाता सूची से 35 लाख नाम हटाने जैसी बड़ी खबर पर उनकी तरफ से ठोस जवाब न आना सवाल खड़ा करता है। अगर यह प्रक्रिया निष्पक्ष है, तो भाजपा-जदयू को भी इसका स्वागत करने के साथ-साथ जनता को यह बताना चाहिए कि इस प्रक्रिया में किस तरह पारदर्शिता बरती जा रही है।

विपक्ष की चिंता यह है कि मतदाता सूची से गरीब, हाशिए पर खड़े वर्गों और विरोधी मतदाताओं के नाम हटाकर सत्ता पक्ष अपनी चुनावी जमीन मजबूत करना चाहता है। अगर ऐसा नहीं है, तो चुनाव आयोग को अपने काम का हिसाब देने में हिचकिचाहट क्यों? क्यों नहीं आयोग प्रेस कॉन्फ्रेंस कर पूरी प्रक्रिया और आंकड़ों को सार्वजनिक करता? बिहार में एसआईआर पर विवाद लोकतंत्र के लिए एक चेतावनी है। चुनाव आयोग को यह समझना होगा कि उसका काम केवल मतदाता सूची सुधारना ही नहीं, बल्कि जनता और राजनीतिक दलों का विश्वास भी जीतना है। आयोग को तुरंत प्रेस वार्ता कर पारदर्शिता लानी चाहिए, यह बताना चाहिए कि किस आधार पर आंकड़े आए और किस प्रक्रिया के तहत यह अभियान चल रहा है।

विपक्ष का दायित्व है कि वह लोकतांत्रिक ढंग से अपनी आपत्तियों को उठाए, वहीं सत्ता पक्ष और चुनाव आयोग का कर्तव्य है कि वे इस पर स्पष्टता दें। मतदाता सूची हर नागरिक का संवैधानिक अधिकार है। इसमें गड़बड़ी या हेरफेर लोकतंत्र की नींव को कमजोर करेगा। अगर बिहार लोकतंत्र की जननी है, तो यह समय है जब उसके लोकतांत्रिक चरित्र की रक्षा की जाए। यह मुद्दा सिफर बिहार नहीं, पूरे देश के लोकतंत्र के भविष्य का है। इसे सत्ता और विपक्ष की राजनीति के बजाय लोकतांत्रिक मूल्यों की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। अगर आयोग पारदर्शिता रखता है, तो न केवल चुनावी प्रक्रिया पर विश्वास बढ़ेगा, बल्कि बिहार में लोकतंत्र की ताकत भी साबित होगी।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच०टी० मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित। संपादक: महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक स्पष्टक्रियान के लिए ऑफिस के पाते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987

माझग्रेन का दर्द?

आयुर्वेद से मिल सकता है राहत का रास्ता

@ डॉ महिमा मक्कर

क्या

आपके सिर में बार-बार तेज़ दर्द उठता है? क्या रोशनी और आवाज़ों परेशान होता है? अगर हाँ, तो यह माझग्रेन हो सकता है। आज के समय में माझग्रेन बहुत आम समस्या बन चुकी है। काम का तनाव, अनियमित दिनचर्या, देर रात तक जागना, गलत खानपान और मोबाइल-लैपटॉप का अधिक इस्तेमाल इसके कारण बन रहे हैं। इस दर्द में सिर के एक तरफ तेज़ धड़कन जैसा दर्द होता है, जो घंटों या कई बार दिनों तक बना रह सकता है।

कई लोग पेनकिलर खाकर इसे दबाने की कोशिश करते हैं, लेकिन यह सिर्फ़ कुछ समय के लिए राहत देता है। आयुर्वेद माझग्रेन का प्राकृतिक और स्थायी समाधान दे सकता है। आज हम जानेंगे कि माझग्रेन क्या है, इसके कारण क्या हैं, आयुर्वेदिक नजरिए से इसे कैसे समझा जाए और किस प्रकार आयुर्वेदिक उपचार और जीवनशैली से माझग्रेन को नियंत्रित या ठीक किया जा सकता है।

माझग्रेन क्या है?

माझग्रेन में सिर में तेज़ दर्द के साथ जी मिचलाना, उल्टी जैसा महसूस होना, रोशनी और आवाज़ से दिक्कत होना जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। यह दर्द अक्सर सिर के एक हिस्से में होता है और कई बार धड़कन जैसा लगता है।

माझग्रेन का दर्द कुछ घंटों से लेकर तीन दिनों तक रह सकता है। कई बार यह अचानक शुरू होता है और तेज़ होता जाता है।

माझग्रेन के कारण क्या हैं?

आधुनिक चिकित्सा के अनुसार माझग्रेन के कारण पूरी तरह स्पष्ट नहीं हैं, लेकिन कुछ वजहें हो सकती हैं:

अत्यधिक तनाव और मानसिक दबाव

नींद पूरी न होना

खाली पेट रहना या भोजन में अनियमितता

अत्यधिक तेज़ रोशनी में रहना

हार्मोनल बदलाव (जैसे महिलाओं में पीरियाइड्स के दौरान)

अधिक कैफीन का सेवन

तेज़ गंध या आवाज़ में रहना

आयुर्वेदिक नजरिए से माझग्रेन

आयुर्वेद में माझग्रेन को "अर्धवर्षदक" कहा गया है। इसका अर्थ है "सिर के आधे हिस्से में दर्द होना"। आयुर्वेद के अनुसार, यह समस्या वात और पित्त दोष के असंतुलन से होती है। जब शरीर में वात और पित्त बढ़ जाते हैं, तो मस्तिष्क में नसों पर प्रभाव डालते हैं, जिससे दर्द उत्पन्न होता है।



आयुर्वेदिक उपचार और घरेलू उपाय

आयुर्वेद में माझग्रेन का इलाज तीन स्तरों पर आधारित है:

शोधन (डिटॉक्सिफिकेशन)

शमन (लक्षणों को कम करना)

निदान परिवर्तन (लाइफस्टाइल में सुधार)

शोधन चिकित्सा (पंचकर्म):

पंचकर्म आयुर्वेद का गहराई से इलाज करने वाला तरीका है। इसके तहत:

नस्य कर्म: नाक में आयुर्वेदिक औषधियों का तेल डालना। इससे सिर और मस्तिष्क की नसें साफ होती हैं

और दर्द में राहत मिलती है।

वर्मन और विरेचन: शरीर के अंदर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालना। इससे वात और पित्त का संतुलन होता है।

शिरोधारा: माथे पर गुनगुने तेल या औषधियुक्त तरल का धीमे-धीमे धारा के रूप में गिराना। इससे दिमाग़ शांत होता है और माझग्रेन की तीव्रता कम होती है।

शमन चिकित्सा (दवाएं और घरेलू नुस्खे):

आयुर्वेद में कई औषधियाँ माझग्रेन में राहत देती हैं:

ब्राह्मी और शंखपुष्पी: मस्तिष्क को शांत करती हैं

और तनाव कम करती हैं।

अश्वगंधा: तनाव और चिंता को कम कर माझग्रेन

में राहत देती है।

त्रिफला: शरीर की सफाई में सहायक।

गोदन्ती भस्म और प्रवाल पिण्डी: सिरदर्द में राहत देने में सहायक।

घरेलू उपाय से हो सकता है समाधान

सिर पर तिल या नारियल तेल की मालिश करें।

अदरक का रस और शहद मिलाकर लेने से दर्द में

राहत मिल सकती है।

तुलसी और अदरक की चाय पीने से माझग्रेन में आराम मिलता है।

पेपरमिंट ऑफल को माथे और गर्दन पर लगाने से ठंडक और आराम मिलता है।

हाइड्रेशन बनाए रखें, पर्याप्त पानी पीएं।

लाइफस्टाइल और खानपान में बदलाव

आयुर्वेद मानता है कि जीवनशैली और खानपान का सीधा असर माझग्रेन पर पड़ता है। इसके लिए:

रोज़ सुबह जल्दी उठें और नियमित समय पर सोने जाएं।

नियमित व्यायाम करें, जैसे हल्की योग क्रियाएं और प्राणायाम।

अधिक तैलीय, मसालेदार और प्रोसेस्ड फूड से परहेज़ करें।

दिन में समय पर भोजन करें, भोजन को स्किप न करें।

गुस्सा, तनाव और चिंता को कम करने का प्रयास करें।

तेज़ रोशनी, तेज़ आवाज़ और मोबाइल स्क्रीन से दूरी बनाएं।

सिर को तेज़ धूप से बचाएँ और कैप/दुपट्टा पहनें।

माझग्रेन में लाभकारी योगासन और प्राणायाम

शावासन (शरीर को पूरी तरह ढीला छोड़ना)

बालासन (चाइल्ड पोज)

वज्रासन

अर्धमत्स्येन्द्रासन

क्या माझग्रेन पूरी तरह ठीक हो सकता है?

आयुर्वेद के अनुसार, अगर समय रहते सही खानपान, जीवनशैली और औषधियों का प्रयोग किया जाए, तो माझग्रेन को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। कई मामलों में, यह पूरी तरह ठीक भी हो जाता है। सबसे ज़रूरी यह है कि दवा के साथ जीवनशैली में बदलाव भी किया जाए। तनाव कम करना, समय पर सोना और उठना, और सही आहार लेना इलाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है। माझग्रेन का दर्द परेशान कर सकता है, लेकिन इसका समाधान भी हमारे पास है। आयुर्वेद न केवल इसके लक्षणों को कम करता है, बल्कि इसके मूल कारणों पर भी काम करता है। यदि आप माझग्रेन से परेशान हैं, तो पेनकिलर पर निर्भर रहने की बजाय आयुर्वेदिक उपाय, नियमित दिनचर्या, सही खानपान और योग को अपनाएँ। धीरे-धीरे आप खुद महसूस करेंगे कि माझग्रेन का दर्द कम हो रहा है और आपका जीवन पहले की तरह सहज और खुशहाल हो रहा है।

महाप्रभु चैतन्य देव: भक्ति का सूरज

महाप्रभु चैतन्य देव, भगवान् श्रीकृष्ण की भक्ति के सूरज, मध्यकालीन भारत में एक ऐसी दिव्य ज्योति बनकर प्रकट हुए, जिन्होंने हरिनाम संकीर्तन के अमृत से असंख्य जीवों का उद्धार किया। उनकी कृपा से नीलाचल-पुरीधाम वृदावन-सा पवित्र हो गया। बड़े-बड़े संत, विद्वान्, वेदांती, और राजा-महाराजा उनके चरणों की धूल से अपने जीवन को धन्य मानते थे। उनकी भक्ति की गंगा में डुबकी लगाकर लोग भवसागर से पार हो गए और श्रीकृष्ण के प्रेम में डूब गए। आइए, इस लेख में हम उनके जीवन, उनके संदेश, और उनकी रचनाओं के बारे में सरल और भक्ति-भाव से जानें।

एक अंथरे युग में ज्योति का प्रादुर्भाव

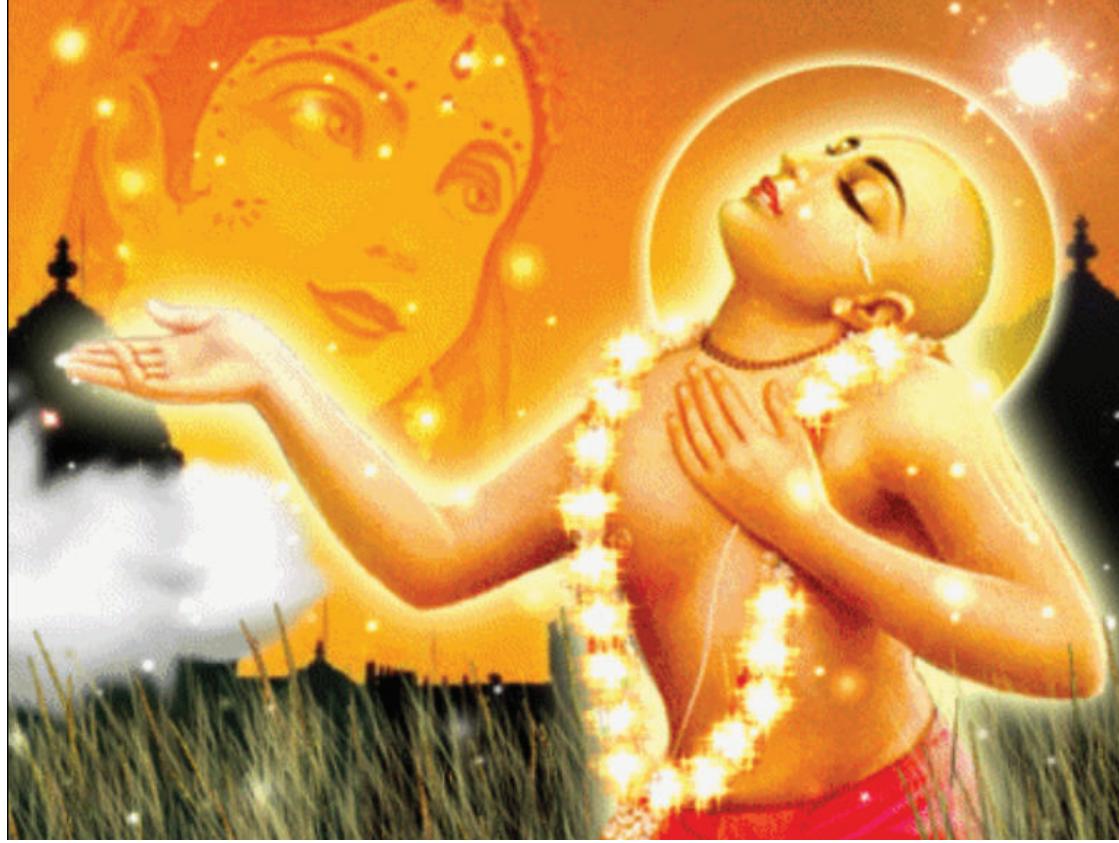
जब चैतन्य महाप्रभु का जन्म हुआ, भारत की हालत बहुत खराब थी। राजनीति में अस्थिरता, धार्मिक अंधविश्वास, और सामाजिक अशांति चारों ओर फैली थी। दिल्ली में लोदी वंश का शासन कमज़ोर पड़ रहा था, और विदेशी आक्रमण का डर हर पल सताता था। विजयनगर और मेवाड़ विदेशी ताकतों को बाहर निकालने की कोशिश में जुटे थे, जबकि उड़ीसा में गजपति प्रतापरुद्र का राज था और गौड़ में हुसैनशाह की सत्ता चल रही थी। धार्मिक स्थिति भी बहुत बिगड़ी हुई थी। तांत्रिक और बौद्ध मतों का प्रभाव बढ़ रहा था, और कई जगह अंधविश्वास हावी हो चुके थे।

लेकिन गौड़ देश में कुछ वैष्णव भक्ति की किरणें चमक रही थीं। कन्यूष्ट और चंडीदास जैसे भक्तों के गीतों से लोगों का मन भक्ति की ओर मुड़ रहा था। श्री राधाकृष्ण की लीलाओं का गायन हो रहा था। ऐसे समय में नवद्वीप के पवित्र ब्राह्मण कुल में, सम्वत् 1543 में फाल्गुन पूर्णिमा को, चैतन्य महाप्रभु का जन्म हुआ। उनके आगमन ने न केवल गौड़-बंगाल, बल्कि पूरे भारत को भक्ति के रस में डुबो दिया। उनके गुरु, माधवेंद्र पुरी, ने पहले ही वैष्णव भक्ति का मार्ग प्रशस्त कर दिया था, और चैतन्य महाप्रभु ने इसे और आगे बढ़ाया।

बचपन की लीलाएँ: भगवान का बालरूप

महाप्रभु का जन्म नवद्वीप में हुआ, जहाँ उनके पिता जगन्नाथ मिश्र और माता शशीदेवी रहते थे। जगन्नाथ मिश्र धर्मनिष्ठ ब्राह्मण थे, और शशीदेवी साक्षात् स्त्रेह और सरलता की मूर्ति। चैतन्य के जन्म से पहले उनके परिवार ने बहुत दुख झेले थे। उनकी आठ बेटियाँ मृत्यु को प्राप्त हो चुकी थीं, और उनके बड़े भाई विश्वरूप ने सन्यास ले लिया था। ऐसे में चैतन्य का जन्म उनके लिए परम आनंद की घड़ी थी।

नवजात शिशु का नाम विश्वंभर रखा गया। उनकी शिशु लीलाएँ अलौकिक थीं। जब वे रोते, तो लोग हरि का नाम लेते, और वे चुप हो जाते। माता शशी उन्हें अपने प्राणों से भी प्यारे मानती थीं। कभी-कभी विश्वंभर घर की सजाई चीजों को बिखेर देते और फिर खाट पर आँखें बंद कर सोने का नाटक करते। माँ उनकी इन लीलाओं पर



बहुत प्रसन्न होतीं।

नामकरण संस्कार के दिन एक अनोखी घटना हुई। उनके सामने कई चीजें रखी गईं—पोथी, खील, धान, कौड़ी, सोना, चाँदी। विश्वंभर ने इनमें से भागवत की पोथी उठा ली। इस तरह उन्होंने बता दिया कि उनका जन्म श्रीकृष्ण भक्ति और भागवत धर्म के प्रचार के लिए हुआ है। जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ी, उनकी लीलाएँ और भी रसभरी होती गईं। धूल में खेलते हुए, उनके गोरे शरीर की चमक और धुंधराले बाल राहगीरों का मन मोह लेते थे।

सन्यास और भक्ति का प्रचार

चैतन्य महाप्रभु ने छोटी उम्र में ही सन्यास लेने का फैसला किया। सम्वत् 1567 में माघ शुक्ल संकांति की रात, जब चार घंटी बाकी थी, वे घर से निकल पड़े। उनकी स्वर्णिम कांति गंगा की धारा पर चमक रही थी। वे तैरकर गंगा पार कर कटवा पहुँचे, जहाँ केशव भारती से उन्होंने सन्यास की दीक्षा ली। केशव भारती पहले सन्यास देने में हिचक रहे थे, क्योंकि उनकी उम्र कम थी, लेकिन प्रभु की प्रबल इच्छा और भक्ति के सामने वे झुक गए।

सन्यास के बाद चैतन्य महाप्रभु ने हरिनाम संकीर्तन का प्रचार शुरू किया। उन्होंने धर्म के नाम पर फैले पाखंडों का अंत किया और श्रीकृष्ण की शुद्ध भक्ति का प्रचार किया। बड़े-बड़े विद्वान् जैसे प्रकाशनांद और सार्वभौम भट्टाचार्य, ऐश्वर्य में डूबे हुए रूप-सनातन, और परमहंस नित्यानंद जैसे लोग उनके चरणों में झुक गए। सभी ने उनके प्रेरणास में डुबकी लगाई और भवसागर से पार हुए।

महाप्रभु ने भक्तियोग और सन्यास आश्रम के माध्यम से कलियुग को द्वापर में बदल दिया। वे श्री राधाकृष्ण की लीलाओं और प्रेम में डूबे रहते थे। उनके लिए हर जगह वृदावन ही था। नीलाचल-पुरीधाम उनके प्रेम और भक्ति से वृदावन-सा हो गया।

शिक्षाष्टक: भक्ति का सार

महाप्रभु ने अपनी शिक्षाओं को आठ श्लोकों में समेटा, जिन्हें शिक्षाष्टक कहा जाता है। ये श्लोक भक्ति का सार हैं। इनमें उन्होंने श्रीकृष्ण के नाम-संकीर्तन, विनम्रता, निष्काम भक्ति, और पूर्ण समर्पण पर जोर दिया। उनके शब्दों में:

श्रीकृष्ण का नाम-स्मरण ही जीवन का आधार है।
भक्ति को विनम्र और निष्काम होना चाहिए।

श्रीकृष्ण ही माता, पिता, और सर्वस्व है।

इन श्लोकों में उनकी भक्ति की गहराई और प्रेम की मिठास ज़लकरी है। ये श्लोक आज भी गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के लिए मार्गदर्शक हैं।

उनके जीवन पर रचनाएँ

महाप्रभु के जीवन और लीलाओं को कई समकालीन संतों और भक्तों ने अपनी रचनाओं में सहेजा। इनमें से कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं:

चैतन्य भागवत: वृदावनदास ठाकुर ने नित्यानंद की आज्ञा से इस ग्रन्थ की रचना की। इसमें चैतन्य की लीलाओं का विस्तार से वर्णन है। कवि ने लिखा:

“नित्यानन्द स्वरूपे आज्ञा धरि शिरे। सूत्र मात्र लिखि आमि कृपा अनुसारे।”

चैतन्य चरितामृत: कृष्णदास कविराज की यह रचना चैतन्य के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें उन्हें राधाकृष्ण का अवतार, परम रसिक भक्त, और महान धर्मचार्य बताया गया है।

चैतन्य चन्द्रोदय: कविकर्णपुर ने इस ग्रन्थ में उनके जीवन का सुंदर वर्णन किया।

चैतन्य मंगल: इसमें उनकी लीलाओं को भक्ति-भाव से प्रस्तुत किया गया है।

गौड़पदतंत्रगणी: जगद्धंधु ने इस रचना में उनके जीवन-चरित्र को विस्तार से लिखा।

मुरारिगुप्त का चैतन्य चरितामृत:

यह भी उनके जीवन का एक सुंदर चित्रण है।

नरहरि ठाकुर की रचनाएँ: इन्होंने चैतन्य को गाथा-भाव में चित्रित किया।

रूप गोस्वामी ने भी उनके कई श्लोकों को अपनी पद्मावती में संग्रह किया। ये सभी रचनाएँ चैतन्य महाप्रभु की भक्ति और लीलाओं का जीवंत दस्तावेज हैं।

अंतिम समय और जगन्नाथ मंदिर में लीलाएँ

महाप्रभु का जीवन श्रीकृष्ण प्रेम में डूबा हुआ था। उनके अंतिम दिन भक्ति के उन्माद में बीते। एक बार वे समुद्र की ओर जाते समय चटक पर्वत को गोवर्धन समझकर उसका आलिंगन करने लगे। भागवत के श्लोक पढ़ते-पढ़ते वे समुद्र में कूद पड़े।

सम्वत् 1580 में आषाढ़ मास में, एक दिन वे जगन्नाथ मंदिर में दर्शन करने गए। वे हमेशा गरुड़ स्तंभ के पीछे से दर्शन करते थे, लेकिन उस दिन वे सीधे मंदिर के भीतर चले गए। दरवाजे बंद हो गए, और लोग आश्चर्य में पड़ गए। ऐसा माना जाता है कि

वे जगन्नाथ जी की ज्योति में लीन हो गए। इस घटना ने उनके भक्तों, खासकर रूप गोस्वामी का हृदय तोड़ दिया। उन्होंने कहा:

“समुद्र के तट-उपवन समूहों को वृदावन समझकर जो ऐमायिषुत हो जाते थे, श्रीकृष्ण के नाम-संकीर्तन में जिनकी रसना सदा लगी रहती थी, वे भक्तिरस के सूरज क्या हमें फिर दर्शन देंगे?”

गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय का आधार

महाप्रभु चैतन्य देव गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के आधार-स्तंभ हैं। उनका जीवन श्रीकृष्णमय था। उन्होंने भक्ति को एक ऐसा रास्ता बनाया, जो हर किसी के लिए खुला था—चाहे वह विद्वान् हो, राजा हो, या साधारण मनुष्य। उनकी शिक्षाएँ और हरिनाम संकीर्तन आज भी लोगों को भवसागर से पार ले जाते हैं।

उनके शिष्यों और समकालीन संतों ने उनकी लीलाओं को ग्रंथों में अमर कर दिया। शिक्षाष्टक जैसे उनके श्लोक भक्ति का सार सिखाते हैं। चैतन्य महाप्रभु का जीवन एक ऐसी मिसाल है, जो हमें बताती है कि भक्ति में ही सच्चा सुख है। वे साक्षात् श्रीकृष्ण के प्रेम के अवतार थे, जिन्होंने कलियुग को भक्ति की रोशनी से भर दिया।

भक्ति का अमर प्रकाश

महाप्रभु चैतन्य देव का जीवन भक्ति का एक ऐसा सूरज है, जो कभी नहीं ढूबता। उनकी हरिनाम संकीर्तन की मधुर धुन आज भी गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के भक्तों के कानों में गूँजती है। उनके शिक्षाष्टक और समकालीन रचनाएँ हमें उनके प्रेम और भक्ति की गहराई का अहसास कराती हैं। वे न केवल एक संत थे, बल्कि श्री राधाकृष्ण के प्रेम के साकार रूप थे। उनके चरणों में नतमस्तक होकर हम यही प्रार्थना करते हैं कि उनकी कृपा हम पर बनी रहे, और हम भी उनके दिखाए भक्ति के मार्ग पर चल सकें।

राष्ट्रपति के 4 नये नॉमिनी: योग्यता या विचारधारा?

13 जुलाई 2025 को, भारत की राष्ट्रपति द्वौपदी मुर्मू ने राज्यसभा के लिए चार नए सदस्यों को नॉमिनेट किया। ये चार लोग हैं—उज्ज्वल निकम, हर्षवर्धन श्रृंगला, मीनाक्षी जैन, और सी. सदानन्दन मास्टर। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 80 के तहत, राष्ट्रपति को 12 सदस्यों को राज्यसभा में नॉमिनेट करने का अधिकार है, जो साहित्य, विज्ञान, कला, या सामाजिक सेवा में विशेष योगदान के लिए जाने जाते हैं। लेकिन सवाल ये है कि क्या ये चारों लोग वाकई अपनी योग्यता की बजह से चुने गए, या उनके पीछे कोई विचारधारा काम कर रही है? आइए, इन चारों के पिछले काम, उनकी योग्यता, और इस नॉमिनेशन की गहराई को समझने की कोशिश करते हैं।

1. कौन हैं ये चार नॉमिनी?

उज्ज्वल निकम: कानून का सिपाही

उज्ज्वल निकम एक मशहूर वकील है, जिन्होंने कई बड़े आपाधिक मामलों में भारत सरकार का पक्ष रखा। 72 साल के निकम ने 1993 के मुंबई बम ब्लास्ट और 26/11 के मुंबई आतंकी हमले जैसे हाई-प्रोफाइल केस में अहम भूमिका निभाई। खास तौर पर, उन्होंने 26/11 के आतंकी अजमल कसाब को सजा दिलवाने में बड़ा रोल अदा किया। इसके अलावा, उन्होंने गुलशन कुमार और प्रमोद महाजन हत्याकांड जैसे मामलों में भी काम किया। 2016 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

हालांकि, निकम का राजनीतिक करियर भी चर्चा में रहा। 2024 के लोकसभा चुनाव में वे बीजेपी के टिकट पर मुंबई उत्तर मध्य से लड़े, लेकिन कांग्रेस की वर्षा गायकवाड़ से हार गए। कुछ लोग मानते हैं कि उनका बीजेपी से जुड़ाव इस नॉमिनेशन का कारण हो सकता है।

हर्षवर्धन श्रृंगला: कूटनीति का चेहरा

हर्षवर्धन श्रृंगला एक पूर्व विदेश सचिव हैं, जिन्होंने जनवरी 2020 से अप्रैल 2022 तक भारत की विदेश नीति को दिशा दी। वे अमेरिका में भारत के राजदूत और बांगलादेश में उच्चायुक्त रह चुके हैं। 2023 में जी20 शिखर सम्मेलन के मुख्य समन्वयक के रूप में उनकी भूमिका ने भारत की वैश्विक छवि को मजबूत किया। श्रृंगला को कूटनीति में उनके अनुभव और ग्लोबल लेवल पर भारत का पक्ष रखने की क्षमता के लिए जाना जाता है।

उनके नॉमिनेशन को ज्यादातर लोग उनकी कूटनीतिक उपलब्धियों से जोड़ते हैं। लेकिन कुछ आलोचकों का कहना है कि उनका चयन सरकार की विदेश नीति को संसद में और मजबूत करने की रणनीति हो सकती है।

मीनाक्षी जैन: इतिहास की नई आवाज

मीनाक्षी जैन एक जानी-मानी इतिहासकार और शिक्षाविद हैं। 2020 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। वे भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद की सदस्य रह चुकी हैं और उनकी किताबें, खासकर भारतीय इतिहास और संस्कृति पर, काफी चीरत रही हैं। जैन का लेखन अक्सर हिंदू राष्ट्रवादी विचारधारा से जोड़ा जाता है, जिसके कारण उनके नॉमिनेशन पर सवाल उठ रहे हैं।



देश के लिए फायदेमंद होगा।

3. विचारधारा का कितना प्रभाव?

राज्यसभा में नॉमिनेटेड सदस्यों का कोई क्षेत्र या राज्य नहीं होता, वे पूरे देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेकिन अक्सर इन नॉमिनेशन्स को राजनीतिक रंग से देखा जाता है। इस बार के चार नॉमिनी में से तीन—निकम, जैन, और सदानन्दन—का बीजेपी या दक्षिणपंथी विचारधारा से कनेक्शन दिखता है। निकम बीजेपी के टिकट पर चुनाव लड़ चुके हैं, जैन की किताबें हिंदू राष्ट्रवादी नजरिए को बढ़ावा देती हैं, और सदानन्दन का सीपीआई(एम) विरोधी स्टैंड बीजेपी की केरल रणनीति से मेल खाता है।

हालांकि, श्रृंगला का बैकग्राउंड अपेक्षाकृत न्यूट्रल है। उनकी कूटनीतिक भूमिका किसी खास विचारधारा से ज्यादा जुड़ी नहीं दिखती। फिर भी, कुछ लोग कहते हैं कि उनका चयन सरकार की विदेश नीति को संसद में सपोर्ट करने के लिए हो सकता है।

सी. सदानन्दन मास्टर: समाजसेवा का चैपियन

केरल के सी. सदानन्दन मास्टर एक शिक्षक और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उन्होंने वंचित वर्गों, खासकर आदिवासी बच्चों, के लिए शिक्षा के क्षेत्र में काम किया। उनकी समाजसेवा और शिक्षा को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने की कोशिश को सराहा गया है। कुछ सोसेंज के मुताबिक, वे सीपीआई(एम) हिंस के शिकार भी रहे हैं, जिसे उनके नॉमिनेशन का एक संभावित कारण माना जा रहा है।

उनके चयन को लेकर कुछ लोग इसे सामाजिक कार्य के लिए समान मानते हैं, जबकि कुछ इसे केरल की राजनीति में बीजेपी की रणनीति से जोड़ते हैं।

2. क्या है नॉमिनेशन का आधार?

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 80 के तहत, राष्ट्रपति 12 सदस्यों को राज्यसभा में नॉमिनेट कर सकते हैं। ये लोग साहित्य, विज्ञान, कला, या सामाजिक सेवा में विशेष योगदान के लिए चुने जाते हैं। इन चारों नॉमिनी को देखें, तो हर एक अपने क्षेत्र में जाना-माना नाम है। उज्ज्वल निकम का कानूनी योगदान, हर्षवर्धन श्रृंगला की कूटनीतिक उपलब्धियां, मीनाक्षी जैन का अकादमिक काम, और सी. सदानन्दन मास्टर की समाजसेवा—ये सभी संविधान के मापदंडों को पूरा करते दिखते हैं।

लेकिन सवाल ये है कि क्या ये चयन पूरी तरह योग्यता पर आधारित हैं? कुछ आलोचकों का मानना है कि इन नॉमिनेशन्स में सत्ताधारी बीजेपी की विचारधारा का प्रभाव दिखता है। उदाहरण के लिए, निकम और जैन का बीजेपी से कनेक्शन और सदानन्दन का सीपीआई(एम) विरोधी बैकग्राउंड इस बात की ओर इशारा करता है कि ये नॉमिनेशन सिर्फ योग्यता तक सीमित नहीं हो सकते। दूसरी ओर, सरकार का कहना है कि ये लोग अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट काम के लिए चुने गए हैं, और उनका चयन

बड़े मुद्दों पर नजरिया देना होता है। अगर ये लोग सिर्फ एक विचारधारा को सपोर्ट करते हैं, तो क्या वे राष्ट्रीय हितों को पूरी तरह से स्प्रिंजेट कर पाएंगे? दूसरी ओर, सरकार का कहना है कि ये लोग अपने क्षेत्र में बेहतरीन काम कर चुके हैं, और उनकी मौजूदगी संसद को और मजबूत करेगी।

5. क्या कहता है इतिहास?

राज्यसभा में नॉमिनेटेड सदस्यों का कॉन्सेप्ट आयरलैंड के संविधान से लिया गया है। 1950 से अब तक, कई बड़े नाम इस सास्ते से संसद पहुंचे हैं। जाकिर हुसैन, जो बाद में भारत के राष्ट्रपति बने, से लेकर रंजन गोगोई, जो सुप्रीम कोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस थे, तक—इन नॉमिनेशन्स ने हमेशा बहस छेड़ी है।

पहले भी कई बार सरकारों पर आरोप लगे कि उन्होंने अपने करीबी लोगों को नॉमिनेट किया। मिसाल के तौर पर, 2020 में रंजन गोगोई के नॉमिनेशन पर सवाल उठे थे, क्योंकि उन्होंने एनआरसी और राम जन्मभूमि जैसे मामलों में फैसले सुनाए थे, जो बीजेपी की विचारधारा से मेल खाते थे। इस बार भी, चार में से तीन नॉमिनी का बीजेपी से कनेक्शन साफ दिखता है।

लेकिन ये भी सच है कि नॉमिनेटेड सदस्यों ने कई बार संसद में अहम योगदान दिया है। जाकिर हुसैन ने शिक्षा और राष्ट्रीय एकता पर जोर दिया, और उनकी मौजूदगी ने संसद को समृद्ध किया। क्या ये चार नॉमिनी भी ऐसा ही कुछ करेंगे? ये बहस का विषय है।

4. क्या ये नॉमिनेशन सही हैं?

योग्यता का पैमाना

चारों नॉमिनी अपने-अपने क्षेत्र में माहिर हैं। निकम का कानूनी अनुभव, खासकर आतंकवाद से जुड़े मामलों में, उन्हें एक मजबूत उम्मीदवार बनाता है। श्रृंगला की कूटनीतिक उपलब्धियां भारत की ग्लोबल इमेज को मजबूत करने में मददगार हो सकती हैं। जैन का इतिहास और संस्कृति पर काम, भले ही विवादास्पद हो, अकादमिक दुनिया में उनकी जगह पक्की करता है। और सदानन्दन की समाजसेवा, खासकर आदिवासी बच्चों के लिए, उन्हें एक सच्चा समाजसेवी साबित करती है।

विचारधारा की छाया

लेकिन इन नॉमिनेशन्स पर विचारधारा का सवाल बार-बार उठ रहा है। कुछ लोग कहते हैं कि सरकार ने इन चेहरों को चुनकर अपने पॉलिटिकल एंजेंडे को आगे बढ़ाने की कोशिश की है। खासकर, जैन और निकम का दक्षिणपंथी कनेक्शन और सदानन्दन का सीपीआई(एम) विरोधी बैकग्राउंड इसे और पुख्ता करता है। विपक्ष का तर्क है कि अगर योग्यता ही आधार थी, तो और भी कई लोग थे जो इन क्षेत्रों में उत्कृष्ट काम कर रहे हैं, फिर इन्हीं चार को क्यों चुना गया?

संतुलन की जरूरत

राज्यसभा में नॉमिनेटेड सदस्यों का रोल देश के लिए बड़े मुद्दों पर नजरिया देना होता है। अगर ये लोग अपने अनुभव का सही इस्तेमाल करें, तो संसद को फायदा होगा। लेकिन अगर ये सिर्फ एक खास विचारधारा को सपोर्ट करने के लिए वहाँ हैं, तो ये लोकतंत्र की उस भावना के खिलाफ होंगा, जिसके लिए ये प्रावधान बनाया गया था।

अंत में, ये नॉमिनेशन हमें सोचने पर मजबूर करते हैं कि क्या हमारी संसद वाकई हर विचार और नजरिये को स्प्रिंजेट करती है, या ये सिर्फ सत्ताधारी दल की पसंद बनकर रह रही है?



अपरा के पदे हटते ही होते हैं

माँ दुर्गा के दर्शन

माँ दुर्गा ने जिस ब्रह्मांड को रचा, वह वही है जिसे हम अपने चारों ओर ढेख सकते हैं। यदि आप गूगल पर खोज करेंगे तो यह ज्ञात होगा कि माँ दुर्गा कुछ ही क्षणों में पृथ्वी जैसे लाखों घटों को उत्पन्न करती हैं और फिर उन्हें समाप्त भी कर देती हैं। पूरे ब्रह्मांड की रचनाकार माँ दुर्गा ही हैं। उन्होंने ही कोरोना वायरस और सभी जीवाणुओं तथा कीटाणुओं की रचना की है।

माँ दुर्गा का महात्म्य अथर्ववेद में विस्तार से वर्णित है। जो व्यक्ति श्रद्धा और समर्पण के साथ माँ दुर्गा के पाठ का अभ्यास करता है, उसे कोरोना जैसी महामारी भी नहीं सकती। कोरोना काल में जिन लोगों ने माँ दुर्गा का पाठ किया, वे पूरी तरह से सुकृति रखे। ऐसे अनेक भई-बहन हैं जिनके अनुभव इस बात का प्रमाण है कि माँ दुर्गा का पाठ जीवन को सुरक्षित और संपन्न बनाता है। भगवान् श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि “भेरी आठ प्रकार की प्रकृति—पृथ्वी, चायु, जल, आकाश, अग्नि, मन, बुद्धि और अहंकार—यह सब निकृप्त हैं।” इन आठ प्रकृतियों के पदे को हटाने के बाद ही परा का अनुभव संभव है। “परा” का अर्थ है माँ दुर्गा, जो सर्वव्यापी है। हमें अपनी अहंकार, मानसिक बंधनों और सांसारिक माया के पर्दों को हटाकर केवल माँ दुर्गा की शरण में जाना होगा। यही असली मार्ग है जो हमें समस्याओं से मुक्ति दिलाता है। सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान केवल माँ दुर्गा के पाठ में ही निहित है। जब हम माँ दुर्गा के श्री चरणों में शरणगत होते हैं, तब न केवल हमें आध्यात्मिक शांति मिलती है, बल्कि हमारी सभी भौतिक और मानसिक परेशनियां भी समाप्त हो जाती हैं।

परमात्मा एक-नाम अनेक



मैं ने अनेक गुरुओं के पास जाकर यह पूछा कि सूर्य, चंद्रमा, ग्रह, नक्षत्र, पृथ्वी, आकाश, चायु, जल, अग्नि—इन सभी को किसने बनाया है? मुझे कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। अंततः मैंने स्वयं साधना और तप के माध्यम से परमात्मा का सानिध्य प्राप्त किया और उसी अनुभव के आधार पर एक ग्रंथ लिखा, जिसका नाम “मयखाना” रखा।

“मयखाना” का अर्थ दुनियावी दृष्टिकोण से शराबधर है, लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण से इसका अर्थ है परमात्मा का धर—वह धर जहाँ परमात्मा के नाम रूपी महिंद्रा प्राप्त होती है। यहीं पर राधा-कृष्ण, सीताराम, माँ दुर्गा, मां काली, मां सरसवती, ईश्वर, अकाल पुरख, वाहेगुरु निमित्त हैं। किसी को राम-राम कहते हुए, किसी को अल्लाह या खुदा कहते हुए, कोई ईश्वर, वाहेगुरु या गॉड का नाम लेता है। लेकिन सभी एक ही परमात्मा के अनेकों रूपों का वर्णन कर रहे हैं। हालांकि, कोई भी एक ही नाम का उच्चारण नहीं करता। कहने को सभी मानते हैं कि ईश्वर एक है, जो सबका परमात्मा है, लेकिन फिर भी लोग उसे समझ नहीं पाते और उसके अनेकों नामों को लेकर आपस में लड़ते हैं। बड़े-बड़े युद्ध होते हैं, जिन्हें धर्मयुद्ध या जिहाद कहा जाता है, लेकिन धर्म का वास्तविक अर्थ कोई नहीं जानता।

धर्म असल में माँ दुर्गा है, सब्द और सनातन माँ दुर्गा ही है। जैसे सूर्य को प्रशाकर, दिवाकर, आपत्ताव, और सन जैसे अनेक नामों से पुकारा जाता है, लेकिन सूर्य एक ही है। किंतु उसके नामों से क्यों लड़ते हो? सूर्य तो सबका है, ऐसे ही परमात्मा भी सबका है। सभी को माँ दुर्गा ने ही बनाया है, और माँ दुर्गा ही परमात्मा है।

सभी रोगों की दवा है परमात्मा का नाम

हाल ही में अब धारी में एक विश्व स्तरीय महासम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें भारत की ओर से मुझे बुलाया गया था। इस सम्मेलन में विभिन्न धर्मों के धर्मगुरु और विद्वान् शामिल हुए थे, जो विश्व की समस्याओं पर मंथन करने के लिए इकट्ठे हुए थे। उन्होंने कहा कि आजकल जो जीवार्थी फैल रही है, उनका कोई समाधान नहीं है।

मैंने उनसे कहा, “समाधान है, लेकिन आपको यह जान नहीं है।” उन्होंने पूछा, “वह समाधान क्या है?” मैंने उन्हें कहा, “सूर्य, चांद, तारों को किसने पैदा किया है? क्या आप नहीं जानते? जो इन सभी को उत्पन्न करने वाले परमात्मा का नाम जानते हैं, वही सभी समस्याओं का समाधान है।”

मैंने उन्हें बताया कि समाधान उनके धर्मग्रंथों—कृत्तरन-ए-पाक, गीता, श्रीगुरुग्रंथ साहिब, और वेदों में लिखा है, लेकिन वे इसके प्रति अनिष्टि हैं। मैंने कहा, “जाने बिना कोई प्रतीति नहीं होती, और बिना प्रतीति के प्रेम नहीं हो सकता। आप आत्मा और परमात्मा को नहीं जानते और न ही मानते, तो उस तत्त्व को कैसे जान पाएं?”

वे बोले, “हमारे धर्मग्रंथों में आत्मा और परमात्मा का कोई उल्लेख नहीं है।” यह पढ़े-लिखे विद्वानों का दृष्टिकोण था। एक वैज्ञानिक ने योषणा की तरफ कोरोना का वयंकर रूप आएगा और सभी मारे जाएंगे। मैंने उनसे कहा, “माँ दुर्गा का पाठ कर लो, कुछ नहीं होगा।” मैंने उन्हें पाठ किया और केवल तीन मिनट में ही उनके बड़े-बड़े रोग समाप्त हो गए। जो कंगल (चर्म रोग) थीक नहीं हो रहा था, वह भी खत्म हो गया।

इस प्रकार, परमात्मा का नाम सभी रोगों की औषधि है और यह हर समस्या का समाधान है।



अब समोसे-जलेबी पर भी चेतावनी! जानिए क्यों जरूरी है यह कदम



@ मनीष पांडेय

अब तक आपने सिगरेट के पैकेट्स पर डगवनी तस्वीरें और “धूम्रपान सेहत के लिए हानिकारक है” जैसी चेतावनियां तो देखी ही होंगी। पर सोचिए, अगर यही चेतावनियां आपकी चाय, बिस्किट, समोसे और जलेबी पर भी लगने लगे तो कैसा लगेगा?

नागपुर में एक नई पहल शुरू हो चुकी है, जहां रोजमर्ग की देसी स्नैक्स और मीठे पर स्वास्थ्य चेतावनियां दिखाई जाएंगी। यह पहल भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से शुरू की गई है, जिसका उद्देश्य है लोगों को यह जानकारी देना कि उनकी रोज की खाने-पीने की चीजों में कितनी चीनी और तेल छुपा होता है, और यह उनकी सेहत पर किस तरह असर डाल सकता है।

बोइंस पर लिखा होगा कि कितनी चीनी और कितना तेल छुपा है

स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक सर्किल जारी कर सभी केंद्रीय संस्थानों, जैसे एस्स नागपुर, को आदेश दिया है कि वे अपने कैफेटेरिया और सार्वजनिक स्थानों पर ऑफल एंड शुगर बोट्स लगाएं। इन बोइंस पर लिखा होगा कि आपके रोजमर्ग के चाय-बिस्किट, समोसे, जलेबी, लड्डू या बड़ा पाव में कितनी चीनी और कितना तेल छुपा है। उदाहरण के तौर पर एक गुलाब जामुन में 5 चम्मच तक

चीनी हो सकती है एक समोसा 300 कैलोरी से ज्यादा दे सकता है। एक प्लेट जलेबी में चीनी और तेल का उच्चतम मिश्रण छुपा होता है जिब लोगों को यह जानकारी खाने से पहले ही दिख जाए, तो संभव है वे सोच समझकर खाएं और ओवरइंटिंग से बचें।

44.9 करोड़ लोग ओवरवेट या मोटापे का हो सकते हैं शिकार

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अगर अभी भी लोगों की खाने की आदतें नहीं बदलीं, तो 2050 तक भारत में लगभग 44.9 करोड़ लोग ओवरवेट या मोटापे का शिकार हो सकते हैं। यह आंकड़ा चीन के बाद भारत को दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोटापे से प्रभावित देश बना देगा। आज भी हर पांच में से एक शहरी भारतीय वयस्क ओवरवेट है जब्तों में भी मोटापा तेजी से बढ़ रहा है, जिसके पीछे कारण हैं जंक फूड और सुस्त लाइफस्टाइल कार्डियोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया नागपुर के अध्यक्ष डॉ. अमर आमले ने कहा “यह सोच की शुरुआत है कि खाने की जानकारी देना भी सिगरेट जैसी चेतावनी देने जितना ही जरूरी हो गया है। शुगर और ट्रांस फैट अब नई तंबाकू हैं, और लोगों को यह जानना जरूरी है कि वे क्या खा रहे हैं।”

एस्स नागपुर ने की पहल की पुष्टि

एस्स नागपुर ने इस नई पहल की पुष्टि करते हुए कहा है कि जल्द ही उनके परिसर में यह बोइंस लगाए जाएंगे,

जिन पर खाने में छुपे तेल और शुगर की वास्तविकता को सरल भाषा में समझाया जाएगा। डॉ. सुनील गुप्ता, डायबेटोलॉजिस्ट, का कहना है कि “अगर लोगों को पता चले कि एक गुलाब जामुन में 5 चम्मच चीनी है, तो वे दो बार सोचेंगे कि इसे खाना है या नहीं।”

स्वाद और सेहत के बीच संतुलन की जरूरत

सरकार ने स्पष्ट किया है कि यह कदम किसी पाबंदी या बैन के लिए नहीं है। न तो समोसे पर रोक लगेगी, न ही जलेबियां हटेंगी, बल्कि यह लोगों को सच दिखाकर उन्हें जानकारी के साथ खाने का विकल्प देने की कोशिश है। यह पहल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फिट इंडिया मूवमेंट से भी मेल खाती है। प्रधानमंत्री पहले ही तेल की खपत में 10% तक कटौती की बात कर चुके हैं। अब नागपुर इस लक्ष्य को जमीनी स्तर पर उतारने जा रहा है।

लोगों को दी जाएंगी पर्सनल जिम्मेदारी की सीख

यह पहल यह भी बताती है कि अब स्वास्थ्य केवल डॉक्टर या सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। लोग जो खाते हैं, उस पर उन्हें खुद नजर रखनी होगी। स्वास्थ्य मंत्रालय का मानना है कि लोग जानना चाहते हैं कि वे क्या खा रहे हैं, लेकिन अक्सर पैकड़ फूड और खुले खाने में छुपी शुगर और तेल की मात्रा उन्हें पता नहीं होती। ऐसे में ‘Eat Wisely, Your Future Self Will Thank You’

जैसे संदेश उन बोइंस पर लिखे जाएंगे ताकि लोग बिना दबाव के सोच-समझ कर खाने का निर्णय लें।

लोग सोचने पर होंगे मजबूर

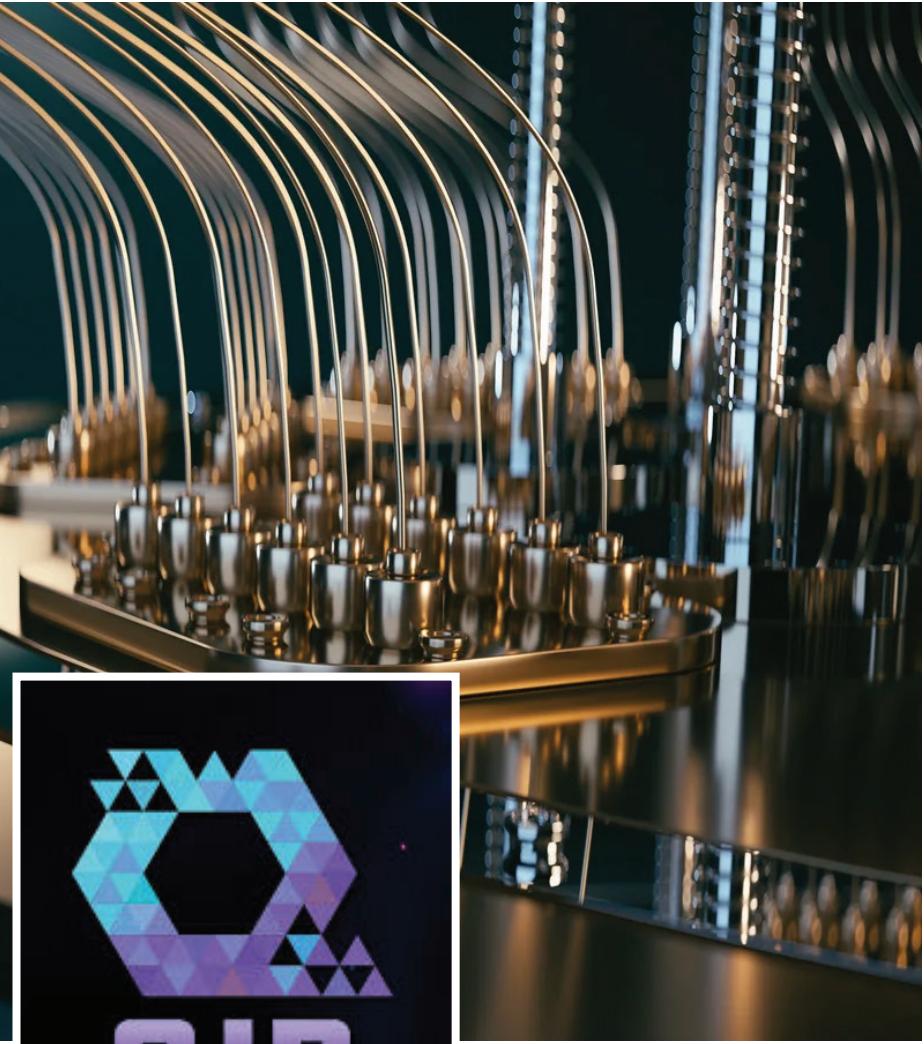
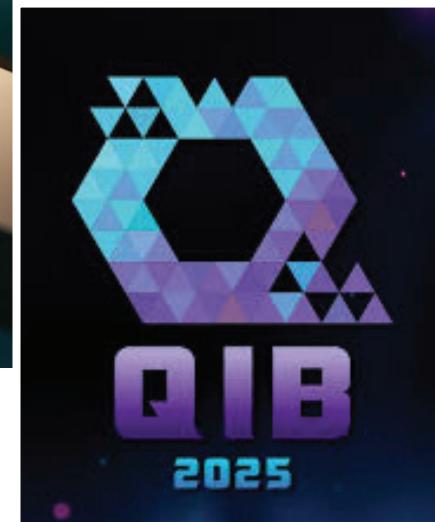
लोगों में बढ़ती स्वास्थ्य जागरूकता को देखते हुए इस पहल के सफल होने की संभावना अधिक है। लोग जानते हैं कि मधुमेह, हार्ट अटैक और हाई बीपी जैसी बीमारियां उनके खाने की आदतों से जुड़ी हैं, पर सटीक जानकारी न होने से वे ठोस कदम नहीं उठा पाते जब उसमने बोर्ड पर साफ लिखा दिखेगा कि समोसा खाने का मतलब कितनी एक्स्ट्रा कैलोरी और शुगर लेना है, तो लोग सोचने पर मजबूर होंगे।

दूसरे राज्यों में भी हो सकती है शुरुआत

अगर नागपुर में यह पहल सफल होती है, तो संभावना है कि इसे देश के अन्य एस्स और सरकारी संस्थानों में भी लागू किया जाएगा। इस तरह धीरे-धीरे पूरे देश में यह स्वास्थ्य चेतावनी बोइंस का कल्चर विकसित होगा, जहां लोग स्मॉकिंग की तरह ओवरइंटिंग को भी सीरियसली लेंगे। “हम आपको खाने से नहीं रोकेंगे, लेकिन आपको यह बताना जरूरी समझते हैं कि आपकी प्लेट में क्या है।” अगली बार जब आप सरकारी दफ्तर की कैटीन में समोसे या जलेबी की तरफ हाथ बढ़ाएं, तो वहां लगे उस बोर्ड पर एक नजर जरूर डालें। हो सकता है, वह बोर्ड चुपचाप आपको समझा दे कि स्वाद के साथ सेहत भी जरूरी है।

क्वांटम इंडिया बैंगलुरु समिट 2025

भविष्य की टेक्नोलॉजी का नया दौर



भारत का टेक हब, बैंगलुरु, एक बार फिर दुनिया का ध्यान अपनी ओर खींच रहा है।

31 जुलाई और 1 अगस्त 2025 को होने वाला क्वांटम इंडिया बैंगलुरु समिट (QIB 2025) भारत का पहला बड़ा क्वांटम टेक्नोलॉजी समिट होगा। इस समिट में दो नोबेल पुरस्कार विजेता, प्रोफेसर डंकन हाल्डेन और प्रोफेसर डेविड ग्रॉस, समेत दुनिया भर के वैज्ञानिक, रिसर्चर, और इंडस्ट्री लीडर हिस्सा लेंगे। यह समिट कर्नाटक सरकार, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस (IISc), और कर्नाटक साइंस एंड टेक्नोलॉजी प्रमोशन सोसाइटी (KSTePS) द्वारा आयोजित किया जा रहा है। इसका मकसद है भारत को क्वांटम टेक्नोलॉजी में ग्लोबल लीडर बनाना। इस आर्टिकल में हम इस समिट के महत्व, इसकी थीम्स, और इसके भारत के टेक फ्यूचर पर प्रभाव को समझेंगे।

क्वांटम टेक्नोलॉजी: नया टेक रिवॉल्यूशन

क्वांटम टेक्नोलॉजी एक ऐसी साइंस है जो फिजिक्स के सबसे वेसिक नियमों पर काम करती है। यह टेक्नोलॉजी कंप्यूटर, कम्प्युनिकेशन, सेंसर, और मटेरियल्स को पूरी तरह बदल सकती है। सामान्य कंप्यूटर बिट्स (0 और 1) पर काम करते हैं, लेकिन क्वांटम कंप्यूटर क्यूबिट्स का इस्तेमाल करते हैं, जो एक साथ कई स्टेट्स में हो सकते हैं। इससे उनकी स्पीड और पावर हजारों गुना बढ़ जाती है।

क्वांटम इंडिया बैंगलुरु समिट 2025 का थीम है 'बिल्डिंग अ क्वांटम इकोसिस्टम: क्यूबिट्स टू सोसाइटी'। यह थीम बताती है कि क्वांटम टेक्नोलॉजी सिर्फ लैब्स तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि हेल्थकेयर, फाइनेंस, सिक्योरिटी, और यहां तक कि आर्ट और सोसाइटी को भी द्रांसफॉर्म करेगी। समिट में पांच मुख्य टॉपिक्स पर फोकस होंगा: क्वांटम कंप्यूटिंग, फाइनेंस और आर्टिफिशियल

इंटेलिजेंस (AI), क्वांटम पेरिफरल्स और हार्डवेयर, हेल्थकेयर और सिक्योरिटी में क्वांटम, और सोसाइटी और आर्ट में इसका प्रभाव।

कर्नाटक सरकार इस समिट के जरिए एक 'क्वांटम एक्शन प्लान' लॉन्च करेगी। यह प्लान बैंगलुरु को क्वांटम टेक्नोलॉजी का ग्लोबल हब बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा। कर्नाटक पहले से ही IT, बायोटेक्नोलॉजी, और नैनोटेक्नोलॉजी में लीडर है, और अब क्वांटम टेक्नोलॉजी में भी अपनी छाप छोड़ना चाहता है।

स्टार स्पीकर्स और ग्लोबल कोलेबोरेशन

इस समिट की सबसे खास बात है इसके स्पीकर्स। दो नोबेल पुरस्कार विजेता, प्रोफेसर डंकन हाल्डेन (2016 फिजिक्स नोबेल) और प्रोफेसर डेविड ग्रॉस (2004 फिजिक्स नोबेल), अपनी रिसर्च और इनसाइट्स शेयर करेंगे। इनके अलावा, प्रोफेसर टॉमासो कैलार्को (यूरोपियन यूनियन क्वांटम फ्लैगशिप), प्रोफेसर एंड्रिया सी. फेरारी (यूनिवर्सिटी ऑफ कैम्ब्रिज), और प्रोफेसर सुवीर सचदेव (हार्वर्ड यूनिवर्सिटी) जैसे दिग्गज भी शामिल होंगे। ये वैज्ञानिक क्वांटम टेक्नोलॉजी के फ्यूचर को समझाने के लिए कीनोट लेकर्स देंगे।

समिट में ग्लोबल लीडर्स, रिसर्चर्स, स्टार्टअप फाइंडर्स, और इन्वेस्टर्स हिस्सा लेंगे। यह एक ऐसा प्लेटफॉर्म होगा जहां इंडिया के टेक इकोसिस्टम को ग्लोबल स्टेज पर शोकेस किया जाएगा। खास बात यह है कि समिट में इंडस्ट्री विजिट्स भी होंगी, जहां लोग टॉप क्वांटम लैब्स और कंपनियों को देख सकेंगे। इससे रियल-वर्ल्ड एप्लिकेशन्स को समझने का मौका मिलेगा।

कर्नाटक सरकार और IISc मिलकर एक ऐसा इकोसिस्टम बना रहे हैं जहां रिसर्च, स्किल डेवलपमेंट, और इंडस्ट्री पार्टनरशिप पर फोकस होंगा: क्वांटम कंप्यूटिंग, फाइनेंस और आर्टिफिशियल

और वर्कशॉप्स होंगे, जो क्वांटम टेक्नोलॉजी के लेटेस्ट डेवलपमेंट्स को हाइलाइट करेंगे।

भारत के लिए क्वांटम का भविष्य

क्वांटम टेक्नोलॉजी का भविष्य भारत के लिए कई संभावनाएं लेकर आ रहा है। हेल्थकेयर में, क्वांटम सेंसिंग बायोलॉजिकल सिस्टम्स की इमेजिंग को बेहतर बना सकता है। सिक्योरिटी में, क्वांटम क्रिप्टोग्राफी डेटा को पूरी तरह सेफ रख सकती है। फाइनेंस और AI में, क्वांटम कंप्यूटिंग जटिल प्रॉब्लम्स को सेकेंड्स में सॉल्व कर सकता है।

कर्नाटक सरकार का विजन है कि बैंगलुरु न सिर्फ भारत का, बल्कि दुनिया का क्वांटम हब बने। इस समिट के जरिए, भारत ग्लोबल क्वांटम रेस में अपनी पोजिशन मजबूत करेगा। डॉ. एकरूप कौर, संक्रेटरी, डिपार्टमेंट ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स, IT, बायोटेक्नोलॉजी, और साइंस एंड टेक्नोलॉजी, ने कहा, "कर्नाटक में क्वांटम टेक्नोलॉजी पहले से ही शोप ले रही है। यह समिट इसे ग्लोबल मैप पर लाएगा।"

समिट का एक और खास फॉकस स्टार्टअप्स और इनोवेशन पर। क्वांटम स्टार्टअप्स के साथ कनेक्ट करने का मौका मिलेगा। इससे इंडिया में क्वांटम टेक्नोलॉजी का कमर्शियलाइजेशन तेज होगा।

कुल मिलाकर, क्वांटम इंडिया बैंगलुरु समिट 2025 भारत के टेक फ्यूचर के लिए एक गेम-चेंजर हो सकता है। यह न सिर्फ रिसर्च और इनोवेशन को बूस्ट करेगा, बल्कि भारत को ग्लोबल क्वांटम रेस में आगे ले जाएगा। बैंगलुरु, जो पहले से ही टेक की दुनिया में अपनी जगह बना चुका है, अब क्वांटम टेक्नोलॉजी के साथ नया इतिहास रचने को तैयार है।

कनाडा के टोरंटो में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा पर फेंके गए अंडे भारत ने जताई कड़ी नाराजगी



@ मनीष पांडेय

टोरंटो में भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं पर अंडे फेंके जाने की घटना ने भारतीय समुदाय में आक्रोश फैला दिया है। भारत सरकार ने इस घटना पर सख्त प्रतिक्रिया दी है और कनाडाई अधिकारियों से तुरंत कार्रवाई की मांग की है। यह घटना 11 जुलाई को टोरंटो में 53वें वार्षिक रथ यात्रा उत्सव के दौरान हुई। हर साल की तरह इस बार भी वहां भारतीय समुदाय के लोग नाचते-गाते हुए भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा निकाल रहे थे। रथ यात्रा में महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों सहित बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग शामिल थे। यात्रा के दौरान श्रद्धालु भजन-कीर्तन कर रहे थे और सड़कों पर उत्सव का माहौल था। इसी दौरान, एक इमारत से अचानक श्रद्धालुओं पर अंडे फेंके गए। वीडियो में साफ दिखता है कि सड़क पर टूटे हुए अंडे बिखरे पड़े हैं और श्रद्धालु हतप्रभ होकर उन्हें देख रहे हैं। हालांकि, इसके बावजूद रथ यात्रा नहीं रुकी और श्रद्धालुओं ने यात्रा जारी रखी।

सोशल मीडिया पर वायरल हुआ वीडियो

यह वीडियो कनाडा में रहने वाली एनआरआई संगठन बजाज ने अपने इंस्टाग्राम पर शेयर किया, जिसमें उन्होंने कहा, “यहां रथ यात्रा निकल रही थी और ऊपर से किसी ने अंडे फेंके हैं। क्यों? क्या किसी की आस्था शोर मचाती है? क्या लोगों की खुशी अच्छी नहीं लग रही? हम रुके नहीं। जब साथ में भगवान जगन्नाथ हों तो कोई नफरत हमें हिला नहीं सकती।” इस वीडियो के सामने आने के बाद भारतीय समुदाय में नाराजगी की लहर दौड़ गई। लोगों ने सोशल

भारत सरकार ने जताई सख्त नाराजगी

14 जुलाई की रात विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बयान जारी कर कहा, “हमने रिपोर्ट देखी जिसमें टोरंटो में शरारी तत्त्वों ने रथ यात्रा के दौरान व्यवधान पैदा करने की कोशिश की। इस तरह की हरकतें निंदनीय हैं। यह एकता और सामाजिक सद्व्यवहार को बढ़ावा देने वाले उत्सव को ठेस पहुंचाती हैं। हमने यह मामला कनाडाई अधिकारियों के सामने रखा है और उनसे तत्काल कार्रवाई की मांग की है।” विदेश मंत्रालय ने यह भी कहा कि उन्हें उम्मीद है कि कनाडा सरकार लोगों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा करेगी और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

मीडिया पर #RespectJagannathRathYatra हैशैटग के साथ इस घटना पर विरोध जताया।

ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पट्टनायक की प्रतिक्रिया

भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा ओडिशा का सबसे बड़ा पर्व माना जाता है, ऐसे में इस घटना पर ओडिशा के पूर्व मुख्यमंत्री नवीन पट्टनायक ने भी नाराजगी जाहिर की। उन्होंने एक्स (ट्रिवटर) पर लिखा, “कनाडा के टोरंटो में रथ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं पर अंडे फेंके जाने की खबरों से व्यथित हूं। इससे भगवान जगन्नाथ के भक्तों की भावनाओं को ठेस पहुंची है। अगर यह मीडिया रिपोर्ट्स सही हैं, तो ओडिशा सरकार को इस मामले को गंभीरता से लेना चाहिए।”

कनाडा में इस तरह की घटनाएं नई नहीं

यह पहली बार नहीं है क्योंकि कनाडा में भारतीय धार्मिक कार्यक्रमों को निशाना बनाया गया हो। इससे

इस यात्रा पर हमला भारतीय आस्था पर हमला माना जा रहा है। भारतीय समुदाय का कहना है कि ऐसे आयोजनों को निशाना बनाकर कटूपंथी तत्व समुदाय में डर और असुरक्षा का माहौल बनाना चाहते हैं।

कनाडा की सरकार की भूमिका पर सवाल

कनाडा की सरकार पर पहले भी यह आरोप लगते रहे हैं कि वह भारत विरोधी और कटूपंथी तत्वों पर कार्रवाई करने में असफल रही है। टोरंटो की इस घटना के बाद एक बार फिर कनाडा की सरकार की नीयत और कार्रवाई पर सवाल उठ रहे हैं। अब तक कनाडा सरकार की ओर से इस मामले में कोई बयान सामने नहीं आया है, जबकि भारत ने इस पर तुरंत एक्शन लेने की मांग की है।

भारतीय समुदाय में रोष, लैकिन विश्वास कायम

घटना के बावजूद, भारतीय समुदाय ने रथ यात्रा रोकने के बजाय उसे पूरी आस्था और विश्वास के साथ पूरा किया। संगम बजाज ने वीडियो में कहा, “यह सिर्फ एक त्योहार नहीं है। यह हमारा अटूट विश्वास है। जब भगवान जगन्नाथ हमारे साथ हैं, तो कोई नफरत हमें हिला नहीं सकती।” कनाडा के टोरंटो में रथ यात्रा के दौरान अंडे फेंकने की घटना ने एक बार फिर दिखाया है कि विदेशों में भारतीय समुदाय किस तरह से नफरत और असहिष्णुता का सामना कर रहा है। भारत सरकार ने सख्त नाराजगी जाहिर कर कर्रवाई की मांग की है, अब यह देखना होगा कि कनाडा सरकार इस मामले में किस तरह की कार्रवाई करती है।

शायब लोग

हम अक्षर थे
मिया दिए गए

क्योंकि लोकतांत्रिक दस्तावेज़
विकास की ओर बढ़ने के लिए

हमारा बोझ नहीं सह सकते थे
हम तब लिखे गए

जब जन गण मन लिखा जा रहा था
भाग्य विधाता दुर्भाग्यवश हमें भूल गया

हम संख्याएँ थे
जिन्हें तब गिना गया

जब कुछ लोग कम पढ़ रहे थे
एक तानाशाह को

कुर्सी पर बिठाने को
बसों में भरे गए

रैलियों में ठेले गए
जोड़ा गया जब

सरकारी बाबू डकार रहे थे
घटाया गया जब

देश में निर्माण कार्य ज़ोरों पर था
हम जहाँ खड़े दिखे

अदना-सा मुँह लिए
जिन पर मानो एक साइन बोर्ड लगा हो :

“कार्य प्रगति पर है;
असुविधा के लिए खेद है”

हम खरपतवार थे
पूँजीवादी खलिहानों में

यूँ ही उग आए
हमारे लिए कीटनाशक बनाए गए

पचहतर योजनाएँ छिड़क-छिड़क कर मारा गया
हम फटे हुए नोट थे

चिपरे सिक्के थे
चले तो चले

वरना मंदिरों, मस्जिदों के
बाहर की दीवारों पर चमकते रहे

कटोरियों में खनकते रहे

हम थे कि नहीं थे

यह भी कहना मुश्किल है
हम पराई जगहे छोड़कर

अपनी जगहों के लिए निकले थे
पहले पौ फटी

फिर पैर फटे
फिर आँत फटी

और आखिर में
जमीन फटी

हम आगे बढ़ाए गए
पिछड़े लोग थे

मसानों में ज़िंदा थे
कागजों पर गायब।

यह तो नहीं है जीवन

यह तो नहीं है जीवन
जिसे जिया जा रहा है

अनकहे-अनसुने
लापरवाह बेअंदाज़

सुश्यों पर रेंगता हुआ
जिसके न होने की कमी नहीं खल रही

जब तक है
जब न हो

समय में तौला हुआ थोक या खुदरा
जीवन किसी अनहोनी की तरह तो नहीं

यही है जीवन क्या
जिसे मैं दर्पणों में नहीं देख पा रहा

पड़ा विदीर्ण हटा-कटा
बँटा परिस्थितियों में

उठते पहर में शोर-सा उठता
गिरते पहर में एक झलक-सा गिरता हुआ

जिसे तुम अपनी छतों से गुजरता हुआ देख रहे हो
गली में

उसी जीवन के चीर का

आधा बनियान आधी पतलून

और उस पर लदी हुई विश्रांतियों का कैल

सिर पर लादे हुए एक शरीर चला जा रहा है मेरा
गिना हुआ सब कुछ जब अनगिन

अनगिन जिस पर एक शून्य का श्राप
शून्य से दूर

लेकिन अधिक नहीं आधिक्य का माप
बदला हुआ दिन

जो सब कुछ नहीं बदल देता
एक सूरज रोज़ आकर कूद जाता है क्षितिज से

एक कालिख रात के ललाट पर पुत जाती है
किसी जलती हुई भ्रांति के दीये की कोर से

सूक्ष्मदर्शी नहीं दिखाता जीवन
औनी पौनी-भागती हुई नसों

और छिलबिलाती कोशिकाओं की जैविक प्रतिस्पर्धा
की तरह

न ही जेब में छनकते सिक्के

न ही जवानी के पतरे में पड़ा लोहा
न गज़ों में नपता है

न कागजों पर छपता है मुहरें ठोककर
भागते हुए आदमी की कमीज़ पकड़ने पर

आदमी नहीं कमीज़ का टुकड़ा हाथ में आता है
भागता हुआ वक्त अपना जामा मुँह में दबाकर

गिरी हुई देहों के बाल से जी चुराकर सरसराते हुए
बिना किसी हँफँहँफ़ी के निकलता है

आँखों का सब कुछ देखा हुआ
कानों का सब सुना हुआ

सब छुआ
सब भाँपा हुआ

अपने अलग-अलग विस्मय और
रोमांच की अलग-अलग कहानियों से बुना गुँथा

सब का सब
एक दिनअर्थहीन हो जाता है

सच उतना ही कड़वा होता है
जितना उसे जीनेवाला जानता है

जब भी देखा जितना भी देखा

आस से भरा एक प्रत्यर्पित मन देखा

घड़ियों में बँधा जीवन देखा
देखने को सिर्फ़ जगहे होतीं तो

पगड़ियों को पैरों से लपेटा हुआ
हर दूसरी ऐसी प्रत्याशा की देहरी तक

सिर्फ़ यह देखने पहुँच जाता कि
वहाँ कोई ऐसा रहता है क्या

जो अभी भी बँधा सकता है ढाढ़स मेरे टूटे हुए
साहस का

सोई हुई दुनिया के लिए सोया हुआ ईश्वर है

खरांटे लेता हुआ खरांटों के बीच
जगे हुए सब लोग तकलीफ़ों के या तो मारे हुए हैं

या फिर फाँक रहे हैं पीड़ का कड़वा मोटा चना
या तमाशबीनों की तरह पीट रहे हैं तालियाँ

लगा रहे हैं ठहाके
रोते हुए विदूषक की करामाती अठखेलियों पर

यह जो अगीत है
दुःख नहीं क्षोभ नहीं चिढ़ नहीं

अचानक आया हुआ जीवन है
जिस पर न कोई नकेल है

न कोई लगाम
एक चौराहे भागते हुए भिड़ गया है

ठोकर खाकर मुँह के बल पड़ा है अचेत
जो बीत रहा है

जो बीत चुका है
जिसे बीत जाना है

उसे किसी भाषा-परिभाषा में बँध सकते हो क्या
सब धूल है धूल

बाँधोगे—फिसल जाएगी
पेशानी से आस्तीन पर

आस्तीन से जमीन पर
जिसे कहते हो जीवन

वह विस्मय से ज्यादा कुछ नहीं।

आदर्श भूषण

नई पीढ़ी के कवि-लेखक और अनुवादक

अनुराग कश्यप बनाम सेंसर बोर्ड

क्यों हर फिल्म पर होता है टकराव?

@ मनीष पांडेय

अनुराग कश्यप बॉलीवुड के उन डायरेक्टर्स में से हैं, जो अपनी बेबाकी और बोल्ड फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। लेकिन जितनी चर्चा उनकी फिल्मों की होती है, उतनी ही चर्चा सेंसर बोर्ड के साथ उनके टकराव की भी होती है। हाल ही में अनुराग ने फिर सेंसर बोर्ड पर सवाल उठाए। मलयालम फिल्म 'जानकी वर्सेस स्टेट ऑफ केरल' को लेकर उन्होंने कहा कि सेंसर बोर्ड फिल्म के नाम और कैरेक्टर्स के नाम तक बदलवाने को कह रहा है। अनुराग का कहना है कि अगर फिल्म में कैरेक्टर्स के नाम पौराणिक पात्रों या असली लोगों के नाम पर नहीं रख सकते, तो फिर फिल्म कैसे बनेगी?

अनुराग और सेंसर बोर्ड की पुरानी लड़ाई

यह टकराव नया नहीं है। अनुराग कश्यप का करियर जितना पुराना है, सेंसर बोर्ड के साथ उनका टकराव भी उतना ही पुराना है। साल 2003 में उनकी पहली फिल्म 'पांच' सेंसर बोर्ड के पास गई। इसमें वायलेंस, ड्रग्स और गालियों के कारण सेंसर बोर्ड ने कई बदलाव करवाए। फिल्म को आखिरकार मंजूरी तो मिल गई, लेकिन किन्हीं कारणों से यह थिएटर तक नहीं पहुंच पाई। इसके बाद अनुराग की फिल्में 'ब्लैक फ्राइडे', 'गैंग्स ऑफ वासेपुर', 'बॉम्बे वेलवेट' और अन्य फिल्मों पर भी सेंसर बोर्ड ने आपत्तियां उठाई और अनुराग का बार-बार सेंसर बोर्ड से विवाद हुआ।

'जानकी वर्सेस स्टेट ऑफ केरल' का माना क्या है?

मलयालम फिल्म 'जानकी वर्सेस स्टेट ऑफ केरल' में मां सीता के नाम 'जानकी' को लेकर सेंसर बोर्ड ने आपत्ति उठाई। बोर्ड ने कहा कि फिल्म के नाम और कैरेक्टर्स के नाम बदलने होंगे क्योंकि यह धार्मिक भावना से जुड़ा हुआ मामला है। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए अनुराग ने कहा, "अगर हम अपने किरदारों के नाम पौराणिक पात्रों के नाम पर भी नहीं रख सकते, तो फिर फिल्में कैसे बनेंगी? क्या हमें अपने कैरेक्टर्स का नाम ABC या XYZ या 1234 रखना पड़ेगा?"

'सोचने' की आजादी पर सवाल

अनुराग का मानना है कि सेंसर बोर्ड फिल्मों में जरूरत से ज्यादा दखल देता है। उन्होंने कहा, "यही चीज़ आपको आगे नहीं बढ़ने देती। ऐसा तब होता है जब आप अपनी ऑडियंस को आगे नहीं बढ़ने देना चाहते। वयस्क वही होते हैं जो अपने लिए सोच सके, लेकिन आप उन्हें सोचने ही नहीं देना चाहते। आप उन्हें नहीं सोचने देना चाहते कि क्या सही है और क्या गलत, वह काम आप कर रहे हैं।"

पहली फिल्म 'पांच' का किस्सा

अनुराग ने अपनी पहली फिल्म 'पांच' की स्क्रीनिंग के दौरान का किस्सा भी सुनाया। उन्होंने बताया कि



सेंसर बोर्ड ने उनकी फिल्म में एक शब्द पर आपत्ति की। वह शब्द था 'चू@#', जिसे सेंसर बोर्ड ने आपत्तिजनक माना। अनुराग ने कहा: "इस शब्द का मतलब स्पिर्फ ब्रेवकूफ होता है, इससे ज्यादा कुछ नहीं। लेकिन चूंकि सेंसर बोर्ड मुंबई में है और वहां के लोग हिंदी ठीक से नहीं जानते, इसलिए वह इसका गलत मतलब निकालते हैं।"

अनुराग ने बताया कि वह अपने साथ हिंदी शब्दकोश लेकर सेंसर बोर्ड की स्क्रीनिंग में गए थे ताकि ऐसे शब्दों का सही मतलब बता सकें। उन्होंने मजाक में कहा, "अब तो लोग फोन तक अंदर ले जाने नहीं देते, उस समय मैं डिक्शनरी लेकर गया था।"



टीटी ने खोली राहत की खिड़की, पर सेंसर फिर भी पीछे

पिछले कुछ सालों में ओटीटी प्लेटफॉर्म पर कंटेंट को सेंसरशिप से राहत मिली थी। अनुराग जैसे डायरेक्टरों के लिए यह आजादी की तरह था। लेकिन अब ओटीटी पर भी सेंसरशिप की मांग उठने लगी है। अनुराग का मानना है कि यह कला और सोच की आजादी को रोकने जैसा है।

'फुले' और 'धड़क 2' पर भी जाताई थी नाराजगी

बीते दिनों अनुराग ने प्रतीक गांधी की फिल्म 'फुले' और सिद्धांत चतुर्वेदी की फिल्म 'धड़क 2' को लेकर

भी सेंसर बोर्ड से नाराजगी जताई थी। उन्होंने लंबा पोस्ट लिखकर सेंसर बोर्ड की प्रक्रिया पर सवाल उठाए थे। हालांकि, बाद में अनुराग को इस पोस्ट पर आलोचना झेलनी पड़ी और उन्होंने माफी भी मांगी थी।

क्या वाकई सेंसरशिप जरूरी है?

भारत में सेंसर बोर्ड का काम फिल्मों में आपत्तिजनक या भड़काऊ चीजों को रोकना है। लेकिन कई बार यह कला की अभिव्यक्ति को भी रोक देता है। अनुराग जैसे फिल्मकार मानते हैं कि दर्शक समझदार हैं और उन्हें खुद तय करने देना चाहिए कि क्या देखना है और क्या नहीं। अनुराग कहते हैं, "अगर दर्शक वयस्क हैं, तो उन्हें खुद तय करने दो कि उन्हें क्या देखना है।"

क्या रचनात्मकता और कला की दुनिया बंध जाएगी?

अनुराग कश्यप और सेंसर बोर्ड की यह लड़ाई सिफ एक डायरेक्टर और एक संस्था के बीच की लड़ाई नहीं है। यह कला की आजादी और समाज की सोच के बीच की लड़ाई है। अगर फिल्मों में नाम और किरदार को लेकर भी रोक लग जाएगी, तो रचनात्मकता और कला की दुनिया बंध जाएगी। समाज और दर्शक अब पहले से ज्यादा समझदार हो चुके हैं। ऐसे में सेंसर बोर्ड को भी अपने नजरिए में बदलाव लाना होगा। अनुराग कश्यप जैसे फिल्मकारों की आवाज इस बात की याद दिलाती है कि कला, सिनेमा और कहानियों को रोका नहीं जा सकता। नाम चाहे 'राम', 'जानकी' या 'सीता' हो, कहानी का मकसद अगर सच्चाई और समाज को दिखाना है, तो उसे रोकना कला का अपमान है।

भारत का AI सपना: क्या हम तैयार हैं?

भात आज टेक्नोलॉजी की दुनिया में बड़ा कदम उठाने की कोशिश कर रहा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) में भारत अपनी पहचान बनाना चाहता है, लेकिन रास्ता आसान नहीं है। हाल ही में, द प्रिंट के एक लेख ने भारत के AI मॉडल्स बनाने की चुनौतियों को उजागर किया। यह लेख उन बाधाओं और संभावनाओं पर गहराई से नजर डालता है, जो भारत को AI की दौड़ में आगे ले जा सकती हैं या पीछे छोड़ सकती हैं।

1. AI में भारत की जंग: क्यों हैं ये हताना ज़रूरी?

AI आज दुनिया की सबसे ताकतवर टेक्नोलॉजी में से एक है। ये न सिर्फ बिजेनेस, हेल्थकेयर, और एजुकेशन को बदल रही है, बल्कि देशों की ताकत को भी परिभाषित कर रही है। भारत, जो पहले से ही IT और सॉफ्टवेयर का पावरहाउस है, AI में पीछे नहीं रहना चाहता। लेकिन सवाल ये है—क्या भारत अपने खुद के फाउंडेशनल AI मॉडल्स बना सकता है, जैसे ओपन ए.आई. का चैट जी.पी. टी या गूगल का बर्ट?

भारत सरकार ने इंडिया ए.आई. मिशन शुरू किया है, जिसके तहत स्टार्टअप्स, रिसर्चर्स, और उद्यमियों को बुलाया गया है कि वे मिलकर देश के अपने AI मॉडल्स बनाएं। 18,000 से ज्यादा हाई-एंड GPUs और बड़े डेटासेट्स के साथ, भारत इस दिशा में तेजी से काम कर रहा है। लेकिन, विशेषज्ञों का कहना है कि भारत को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे डेटा की कमी, टैलेंट की कमी, और R&D में निवेश की कमी।

AI मॉडल्स बनाना क्यों ज़रूरी है? क्योंकि ये मॉडल्स न सिर्फ टेक्नोलॉजी को बल्कि भारत की संस्कृति, भाषा, और ज़रूरतों को भी समझने में मदद करेंगे। विदेशी मॉडल्स अक्सर भारतीय भाषाओं और संदर्भों को समझने में चूक जाते हैं। उदाहरण के लिए, भारत की 22 आधिकारिक भाषाओं और सैकड़ों बोलियों को समझने वाला AI मॉडल बनाना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। अगर भारत अपने मॉडल्स बनाएगा, तो ये न सिर्फ टेक्नोलॉजी में आत्मनिर्भरता लाएगा, बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था और रोजगार को भी बूस्ट करेगा।

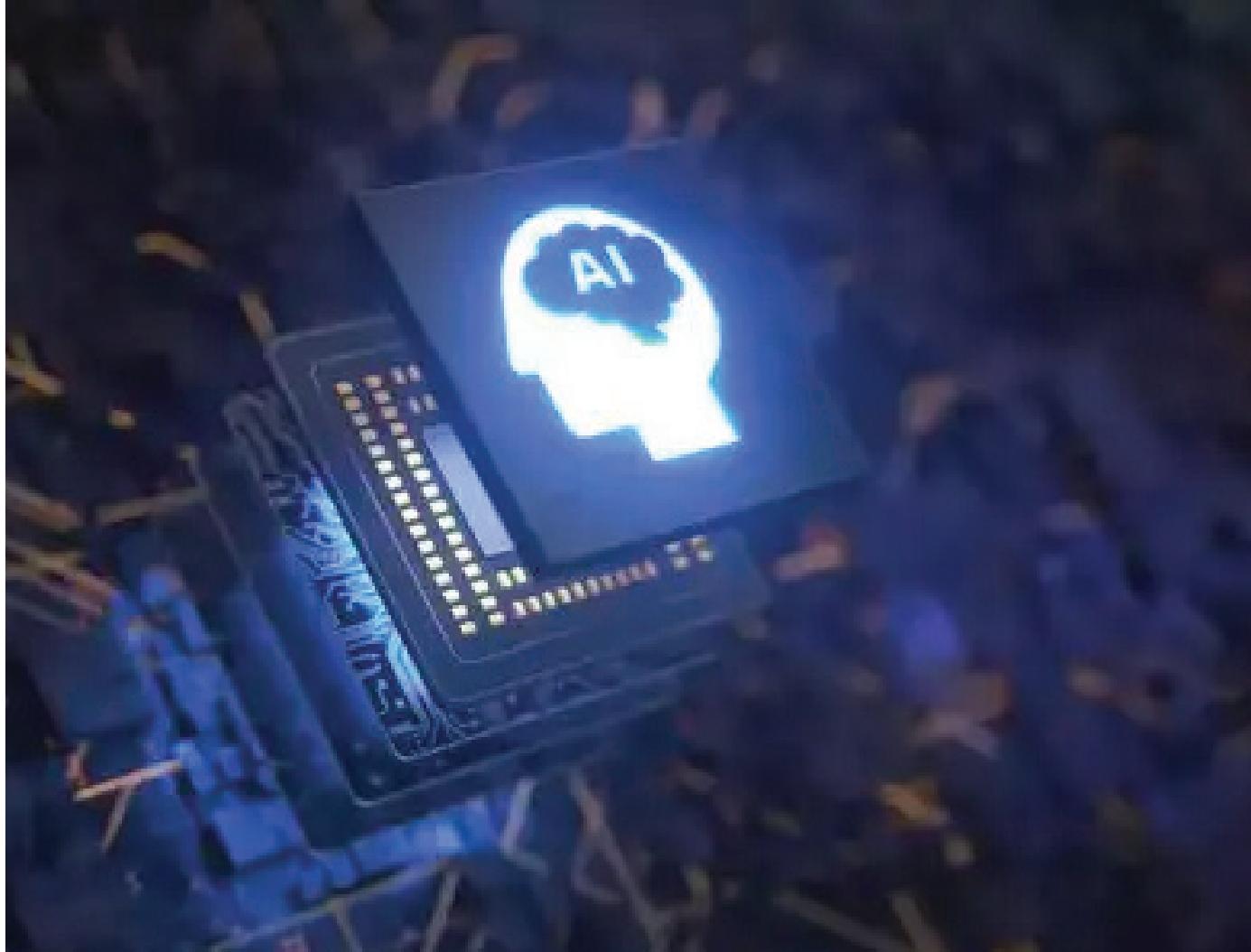
2. रास्ते की रुकावें: क्या-क्या है प्रॉब्लम?

भारत के AI सपने में कई रुकावें हैं। द प्रिंट के लेख में IIT मद्रास के प्रोफेसर बी. रविंद्रन और माइक्रोसॉफ्ट की CPO अपर्णा चेन्नाप्रगड़ा ने इन चुनौतियों को बारीकी से बताया। आइए, इन प्रॉब्लम्स को समझते हैं:

डेटा की कमी: AI मॉडल्स को ट्रेन करने के लिए ढेर सारा डेटा चाहिए। लेकिन भारत में क्वालिटी डेटा, खासकर भारतीय भाषाओं में, बहुत कम है। उदाहरण के लिए, हिंदी, तमिल, या बंगाली में बड़े डेटासेट्स बनाना आसान नहीं है, क्योंकि डिजिटल कंटेंट ज्यादातर अंग्रेजी में है।

टैलेंट का टोटा: AI में एक्सपर्ट्स की कमी भारत की सबसे बड़ी कमज़ोरी है। हमारे पास IT प्रोफेशनल्स तो बहुत हैं, लेकिन AI रिसर्चर्स को फाउंडेशनल AI मॉडल्स बनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। हाल ही में, 22 अप्रैल 2025 तक इस मिशन के लिए प्रोफेशनल्स मार्गे गए थे, जिसमें कई स्टार्टअप्स ने हिस्सा लिया।

पैसों की प्रॉब्लम: AI मॉडल्स बनाना महंगा है।



इसमें हाई-एंड हार्डवेयर, जैसे GPUs, और रिसर्च में भारी निवेश चाहिए। भारत में प्राइवेट सेक्टर और सरकार का R&D बजट अभी भी अमेरिका या चीन जैसे देशों से बहुत कम है।

भाषाई जटिलता: भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता AI के लिए एक ताकत भी है और चुनौती भी। एक ऐसा मॉडल बनाना, जो हिंदी, तमिल, मलयालम, और पंजाबी जैसी भाषाओं को समझे, बहुत मुश्किल है। विदेशी मॉडल्स अक्सर इन भाषाओं में कमज़ोर पड़ जाते हैं।

इन सबके बावजूद, भारत के पास मौका है। टाइम्स ऑफ़ इंडिया के एक लेख में कहा गया कि चीन के DeepSeek जैसे मॉडल्स से प्रेरणा लेकर भारत भी अपने फ्रैंटियर AI मॉडल्स बना सकता है। लेकिन इसके लिए सही रणनीति और निवेश की ज़रूरत है।

3. भारत का गेम प्लान: क्या कर रही है सरकार?

भारत सरकार AI में आत्मनिर्भरता के लिए कई कदम उठा रही है। इंडिया ए.आई. मिशन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। इस मिशन के तहत, सरकार ने स्टार्टअप्स और रिसर्चर्स को फाउंडेशनल AI मॉडल्स बनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। हाल ही में, 22 अप्रैल 2025 तक इस मिशन के लिए प्रोफेशनल्स मार्गे गए थे, जिसमें कई स्टार्टअप्स ने हिस्सा लिया।

सरकार का प्लान है कि 18,000+ GPUs और

बड़े डेटासेट्स का इस्तेमाल करके भारत अपने AI मॉडल्स बनाए। इसका फोकस है कि ये मॉडल्स सस्ते हों, सुरक्षित हों, और भारतीय ज़रूरतों को समझें। इसके अलावा, सरकार डेटा प्राइवेसी और AI रेगुलेशन पर भी काम कर रही है। उदाहरण के लिए, IT एक्ट 2000 में बदलाव की बात हो रही है ताकि AI और जेनरेटिव AI मॉडल्स के लिए नए नियम बनाए जा सकें।

लेकिन, सवाल ये है कि क्या ये कदम काफी हैं? विशेषज्ञों का कहना है कि सरकार को और ज्यादा प्राइवेट सेक्टर के साथ मिलकर काम करना होगा। साथ ही, AI टैलेंट को भारत में रखने के लिए बेहतर मौके देने होंगे।

4. आगे की राह: सपना हक्कीकत करें बनेगा?

भारत का AI मिशन आसान नहीं है, लेकिन नामुमाकिन भी नहीं। एम.आई.टी टेक्नोलॉजी रिव्यू के एक लेख में कहा गया कि भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता एक चुनौती तो है, लेकिन इसे ताकत भी बनाया जा सकता है। अगर भारत अपने मॉडल्स को भारतीय भाषाओं और ज़रूरतों के हिसाब से बनाए, तो ये ग्लोबल मार्केट में भी कामयाब हो सकते हैं।

क्या करना होगा?

डेटा पर फोकस: भारत को अपनी भाषाओं में डिजिटल डेटा बढ़ाना होगा। इसके लिए सरकार, प्राइवेट सेक्टर, और एकेडमिक इंस्टिट्यूशन्स को मिलकर काम

करना होगा।

टैलेंट को पकड़ना: AI रिसर्चर्स को भारत में रखने के लिए बेहतर सैलरी, रिसर्च फंडिंग, और इंटरनेशनल कॉलेबोरेशन के मौके देने होंगे।

निवेश बढ़ाना: AI में निवेश को और बढ़ाना होगा। चीन और अमेरिका जैसे देश AI में अरबों डॉलर खर्च कर रहे हैं। भारत को भी अपने R&D बजट को बढ़ाना होगा।

एजुकेशन और स्किलिंग: यूनिवर्सिटीज और इंस्टिट्यूशन्स में AI कोर्सेज को बढ़ावा देना होगा ताकि नई जनरेशन AI में माहिर हो।

अटलांटिक कॉउन्सिल के एक लेख में कहा गया कि भारत का AI में “आत्मनिर्भर” दृष्टिकोण इसे ग्लोबल रेस में अलग बनाता है। अगर भारत इन चुनौतियों से पार पा ले, तो वो न सिर्फ अपने लिए, बल्कि दुनिया के लिए भी AI का पावरहाउस बन सकता है।

गिर्ज़ा: भारत का AI भविष्य

भारत का AI सपना बड़ा है, लेकिन रास्ता मुश्किलों से भरा है। डेटा, टैलेंट, और निवेश की कमी जैसी चुनौतियां हमें पीछे खींच सकती हैं, लेकिन सरकार और प्राइवेट सेक्टर के जॉइंट एफटर्स इसे हकीकत में बदल सकते हैं। इंडिया ए.आई. मिशन और 18,000+ GPUs जैसे कदम सही दिशा में हैं, लेकिन अभी लंबा रास्ता तय करना है। अगर भारत अपनी भाषाओं, संस्कृति, और ज़रूरतों को AI में शामिल कर ले, तो ये न सिर्फ टेक्नोलॉजी में, बल्कि ग्लोबल स्टेज पर भी भारत की

लॉइस में जड़ेजा की जंग

22 रन से हार गई टीम इंडिया

@ आनंद मीणा

वही ऐतिहासिक मैदान, वही तारीख। इस बार इंग्लैंड और भारत के बीच खेला गया तीसरा टेस्ट मैच आखिरी घंटे तक रोमांच से भरा रहा। रवींद्र जडेजा आखिरी तक डटे रहे, उम्मीद बनाए रखी, लेकिन टीम इंडिया 22 रन से हार गई। जीत बेहद कठिन थी, लेकिन कुछ बड़ी वजहों ने इस जीत को हार में बदल दिया। आखिरी दिन रवींद्र जडेजा भारत की उम्मीद बनकर खड़े रहे। उन्होंने 181 गेंदों में 61 रन बनाए और एक छोर संभाले रखा। लेकिन जब जीत कुछ कदम दूर थी, मोहम्मद सिराज का विकेट गिर गया और भारत हार गया। जडेजा नाबाद लौटे, चेहरे पर मायूसी और आँखों में अधूरी लड़ाई का खालीपन लिए।

भारत की हार बड़ी वजहें

शुरुआत में ही टॉप ऑर्डर का गिरना

लॉइस टेस्ट के आखिरी दिन भारत ने 58/4 से आगे खेलना शुरू किया। उम्मीद थी कि केएल राहुल और मिडिल ऑर्डर थीरे-थीरे रन बनाएंगे। लेकिन इंग्लैंड के गेंदबाज बेन स्टोक्स और जोफ्रा आर्चर ने शुरुआत में ही भारत की कमर तोड़ दी केएल राहुल 39 रन बनाकर एलबीडब्ल्यू आउट हुए। ऋषभ पंत सिर्फ 9 रन बनाकर क्लीन बोल्ड हो गए। वॉशिंगटन सुंदर खाला थी नहीं खोल सके। सुबह के पहले सत्र में भारत ने सिर्फ

43

रन जोड़े और तीन विकेट गंवा दिए। स्कोर 74/7 तक पहुंच गया जब मैच के इतने अहम दिन पर टॉप ऑर्डर लड़खड़ा जाए, तो जीत की उम्मीद कमज़ोर हो जाती है।

ऋषभ पंत का रन आउट

पहली पारी में ऋषभ पंत का रन आउट होना मैच का सबसे बड़ा मोड़ था। पंत की डंगली पहले से ही चोटिल थी, जिससे वह आराम से दौड़ नहीं पा रहे थे। उन्होंने रन के लिए कॉल की, लेकिन इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स ने सीधा थ्रो मारकर उन्हें रन आउट कर

दिया। शुभमन गिल ने मैच के बाद कहा, “अगर पंत रन आउट नहीं होते, तो हम 30-40 रन और जोड़ सकते थे। मैच का नतीजा बदल

उन्होंने साबित किया कि क्यों उन्हें दुनिया के सबसे बहादुर कप्तानों में गिना जाता है।

जोफ्रा आर्चर की तेज़ गेंदबाजी का कहर

जोफ्रा आर्चर ने करीब चार साल बाद टेस्ट क्रिकेट में वापसी की और आते ही असर दिखा दिया। उनकी 144 किमी/घंटा की रफ्तार ने भारतीय बल्लेबाजों को परेशान कर दिया। उन्होंने ऋषभ पंत को क्लीन बोल्ड किया और वॉशिंगटन सुंदर को कैच आउट कराया। आर्चर की तेज़ गेंदों और सही लाइन-लेंथ ने भारतीय बल्लेबाजों की परीक्षा ली और वह उसमें सफल भी हुए। उनकी गेंदबाजी ने भारत के रन बनाने की रफ्तार को धीमा कर दिया और विकेट गिरते रहे।

आखिरी घंटे का दबाव और छोटी-छोटी गलतियां

जैसे-जैसे जीत पास आती गई, वैसे-वैसे दबाव बढ़ता गया। रवींद्र जडेजा ने संयम बनाए रखा और बुमराह के साथ 35 रन और फिर सिराज के साथ 23 रन जोड़े। लेकिन इंग्लैंड ने शॉट बॉल प्लान और स्लेंजिंग से सिराज और बुमराह को परेशान किया। बुमराह 54 गेंदों तक टिके, लेकिन आखिर में वह भी आउट हो गए। फिर शोएब बशीर, जिनकी डंगली टूटी थी, ने गेंद फेंकी और सिराज का हल्का सा किनारा लेकर गेंद स्टंप्स पर जा लगी। सिराज वहीं पिच पर बैठ गए।

इस तरह आखिरी कुछ रनों पर भारत की हार तय हो गई।

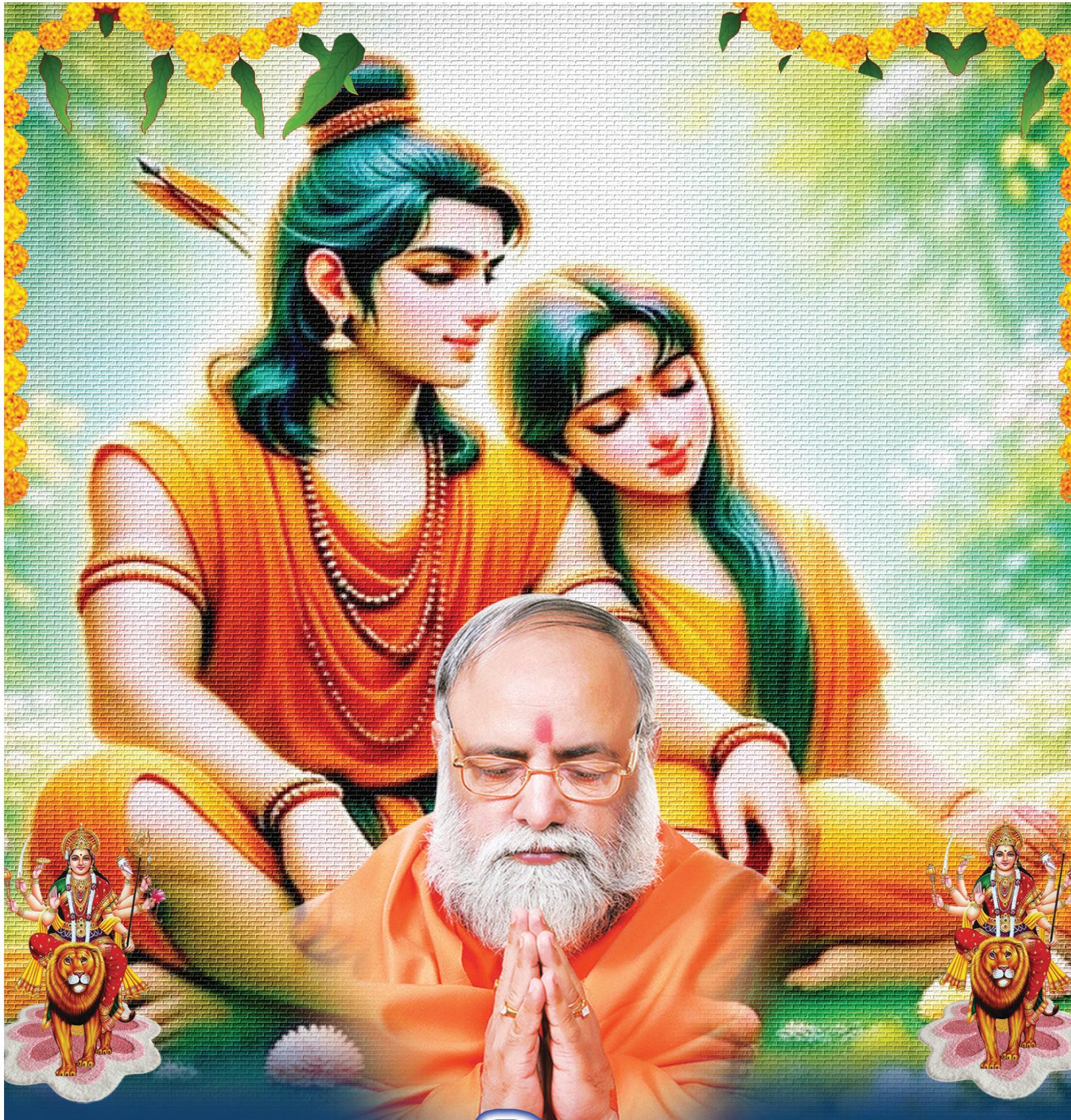
जडेजा की लड़ाई

रवींद्र जडेजा ने अपनी बल्लेबाजी से भारत को जीत के करीब पहुंचाया। उन्होंने चौथी लगातार टेस्ट दबाव पारी में अर्धशतक लगाया। उन्होंने कोई जश्न नहीं मनाया क्योंकि उन्हें पता था कि काम अभी पूरा नहीं हुआ है। उन्होंने अकेले मोर्चा संभाला, लेकिन दूसरे छोर से विकेट गिरते रहे। आखिरी में जब हार तय हुई, तब भी जडेजा नाबाद लौटे। उनकी इस लड़ाई ने दिखाया कि कैसे हार के बावजूद कोई खिलाड़ी दिल जीत सकता है।

लेकिन उम्मीद अभी बाकी

लॉइस टेस्ट में हार से भारतीय टीम को बड़ा झटका लगा है। जीत बहुत करीब थी, लेकिन कुछ गलतियों और इंग्लैंड के खिलाड़ियों की शानदार परफॉर्मेंस के कारण भारत 22 रन से हार गया। यह हार सिखाती है कि टेस्ट क्रिकेट में संयम, धैर्य और छोटी-छोटी चीजें कितनी अहम होती हैं। टीम इंडिया को अब आगे की सीरीज में गलतियों से सबक लेकर आगे बढ़ना होगा। रवींद्र जडेजा, जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज जैसे खिलाड़ियों की हिम्मत और जुझारूपन ने दिखाया कि भारतीय टीम कभी हार नहीं मानती।





प्रभु कृपा दुर्घट निवारण समाप्ति

BY

Arihanta Industries

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML



15 ML



ULTIMATE HAIR SOLUTION

NO

ARTIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :